बृज की लोक कलाएं

बृज प्रदेश के ऐतिहासिक, भौगोलिक,
सामाजिक आर्थिक व सांस्कृतिक पक्ष
का अभिलेखीकरण।

डा. (श्रीमती) विमलावर्मा
एव
जितेन्द्र सिह

संस्कृति विभाग, उ.प्र. लखनऊ

बृज की लोक कलाएं

बृज प्रदेश के ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक आर्थिक व सांस्कृतिक पक्ष का अभिलेखीकरण।

डा. (श्रीमती) विमलावर्मा
एव
जितेन्द्र सिह

संस्कृति विभाग, उ.प्र. लखनऊ

विषय सूची

बृज की ऐतिहासिक, धार्मिक, आर्थिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

मथुरा ब्रज सस्कृति का केन्द्र बिन्दु है ब्रज प्रदेश का उल्लेख वेदो मे भी प्राप्त है। सस्कृत म ब्रज का अथ है गायो की भूमि [illegible] था। कभी यह प्रदेश सुन्दर माग वाली हृष्ट-पुष्ट गायो के विचरण भूमि के रूप म जाना जाता था। कृष्ण का गाय चराना और दूध दही मक्खन का खाना शायद इसलिए सभव हुआ है मथुरा और उसके आस-पास का क्षेत्र बृज भूमि के अन्तगत आता है जिसमे वर्तमान के आगरा अलीगढ तथा भरतपुर के कुछ क्षेत्र भी सम्मिलित है। यहाँ की भाषा बहुत मधुर है। सब मे प्रिय देवता कृष्ण है और सपूर्ण क्षत्र कृष्णमय है।

मथुरा और उसके आस-पास का क्षेत्र अनेक सास्कृतिक एतिहासिक नामो से प्रसिद्ध रहा है जहा आज वृदावन है वहा कभी मधुवन नाम स बहुत बडा और सुन्दर वन था। ऐतिहासिक दस्तावेजो के आधार पर कहा जा सकता है कि अर्धचन्द्राकार रूप म यमुना के किनारे बसे इस शहर को एक बलवान बुद्धिमान व आचारवान दैत्य मधु ने "मधुपुरी" नाम से बसाया था। पर बाल्मीकि रामायण उत्तरकाड 70 के आधार पर इस नगरी के निर्माता भगवान राम के छोटे भ्राता शत्रुघन थे। मथुरा राज्य अर्थात ब्रज प्रदेश पर वर्षो तक यदुवशियो का राज्य रहा जिस म श्रीकृष्ण सबसे अधिक लोकप्रिय हुए। श्रीकृष्ण ने अपने ब्रज प्रदेश के लिए बहुत काम किया। वह 64 कलाओ मे पूर्ण थे। उनका जीवन बहुमुखी बहुआयामी विलक्षण और अलौकिक था। वह कुशल राजनीतिज्ञ भी थ और दार्शनिक भी। उन्होने उस काल मे भारत को जो कुछ भी दिया वह आज लगभग 5 000 वर्षो के बाद भी उतना ही सर्वग्राही है जितना उस समय था।

उस काल मे मथुरा मे वनो की बहुतायत थी उस समय 12 वन 24 उपवन तथा 5 पर्वतो का समावेश इस बृजभूमि मे था जो समय के साथ-साथ अपने मे सिमटते गये। आततायियो के आक्रमण और जनसख्या विसफोट के कारण इन सुन्दर वनो, उपवनो का स्वरूप ही बदल गया है अब यहाँ कहने मात्र को वन या उपवन है।

ब्रज प्रदेश म इस समय यादव अहीर चतुर्वेदी आदि जातियो का बाहुल्य है जबकि अन्य जातियो वैश्य तरह के तरह कलाकार क्षत्रियो व ब्राह्मणो की विभिन्न उपजातियो कायस्थ खत्री तथा अन्य पिछली जातियाँ भी इस क्षेत्र मे मिलजुल कर रह रही है। मुसलमान तथा ईसाइयो का भी यहाँ वास है। इस समय मथुरा केवल हिन्दुओ का क्षेत्र नही है वरन् और भी मतावलम्बी यहाँ रहते हैं।

रहन-सहन व खान-पान मे थोडा अतर आया है पर अभी भी जोर दूध व दूध मे बनी वस्तुओ पर है। मिष्ठान, खीरा-कचौडी व अन्य पक्वान के ये लोग बहुत शौकीन है। वर्ष के प्रत्येक माह मे कोई न कोई त्यौहार होता रहता है जिस के कारण-मथुरा मे भक्तजनो और आने-जाने वाले देशी व विदेशी पर्यटको का मेला लगा रहता है। मथुरा शहर और ब्रजभूमि के प्रत्येक दर्शनीय स्थल मोटर बस सेवा माग मिनी बस टैक्सी या रेलवे लाइन द्वारा देश के बडे-बडे शहरो से जुडे है। पर्यटको के लिए धर्मशालाओ और सरकारी होटलो का अच्छा प्रबन्ध है पर सडको की दुर्दशा है जिससे आने-जाने वाले यात्रियो को काफी असुविधाओ का सामना करना पडता है।

अधिक्तर पर्यटक या तो वृदावन, बरसाना गोकुल गोबर्धन, नन्दगॉव, डीग आदि के प्रसिद्ध मदिरो धार्मिक स्थलो, प्रसिद्ध घाटी उत्सवो, मदिरो की झाँकिया देखने को आते है या फिर पुण्य लाभ पाने की दृष्टि से। ब्रज की रज उनके लिए समस्त पापो से मुक्ति दिलाने वाली है।

मथुरा का आज रूप उतना लुभावना नही है जैसा कि विभिन्न ऐतिहासिक व धार्मिक पुस्तको मे वर्णित किया गया है। मकानो का टीलो पर बना होना एक ऐसी विशेषता है जिसको अनुभव करते ही बरबस बार-बार लुटी-पिटी और बनी-सवरी मथुरा नगरी आखो के सामने आ जाती है। दिल्ली के समीप बसी होने के कारण बार-बार आक्रमणकारियो द्वारा रौंदी गई है। मथुरा व ब्रज प्रदेश का दिल्ली के समीप बसा होना उसका दुर्भाग्य भी था और सौभाग्य भी।

पुराने मकान दुर्गनुमा है जिन की विशालता का अनुमान भीतर घुसने के बाद ही होता है। लाहोरी ईटो या सीमेट–गारा व पत्थर के बन यह मकान पुरातन व आधुनिक समय के बीच की वे कडियाँ है जो ब्रजप्रदेश के ऐतिहासिक धार्मिक कलात्मक तथा आर्थिक उतार चढाव की गाथा स्पष्ट करती है। इस ब्रज प्रदेश म ना केवल 64 कलाओ मे पूर्ण श्रीकृष्ण को ही जन्म दिया वरन् महाकवि सूरदास सगीताचार्य स्वामी हरिदास स्वामी दयानन्द के गुरू विरजानन्द, कवि रसखान को भी इस स्थली पर रहने का अवसर दिया है और इन लोगो ने भी अपने सगीत काव्यधारा और सुन्दर विचारो के द्वारा ब्रज प्रदेश के विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कृष्ण–भक्ति और ब्रज सस्कृति के प्रसार मे ब्रज क लीला स्थला की खोज और ब्रज यात्रा के प्रचलन काय मे बल्लभ सप्रदाय के सर्वश्री बल्लभाचार्य जी और विट्ठलनाथ चैतन्य मत के श्री चैतन्य महाप्रभु रूप–सनातन गोस्वामीगण और नारायण भट्ट जी तथा निबार्क सप्रदाय के श्री चतुरानन नागा जी ने सर्वप्रथम प्रयास किया था इसके पश्चात उनके अनुनायियो न काम किया।

ब्रज प्रदेश मे यात्राओ का सास्कृतिक महत्व है प्रत्येक वर्ष यात्राये आयोजित की जाती है। कुछ यात्राएँ पैदल चलकर की जाती है जबकि कुछ (दडौती परिक्रमा) साष्टॉग दडवत करते हुए पूर्ण की जाती है। इस यात्रा मे काफी समय व परिश्रम लगता है। इसके अतिरिक्त एक यात्रा अत्यन्त द्रुत गति से की जाती है जिस मे विशेष कर साधुसत ही भाग लेते है। इस यात्रा को "लठामार यात्रा" भी कहते है। पाँच दिन की यात्रा से लेकर 40 दिन की यात्रा की जाती है। यात्राये लगभग 15 स्थानो की होती है जिन के नाम है– मथुरा मथुरा मडल (मथुरा, गरूण गोबिन्द और वृदावन,), गाबर्धन–राधाकुड, बृदावन, नन्दगाव, बरसाना, कामबन, गोकुल, मधुबन तालबन, बहुलावन, भाडीरबन तथा लोहबन। इन यात्राओ की तैयारी काफी समय पूर्व से की जाती है। खाने–पीने के सामान से लेकर ओषधालय, डाकखाना, पुलिस का प्रबन्ध डेरा तम्बू की पूर्ण व्यवस्था सफाई व रोशनी आदि सभी का सुचारू रूप से प्रबन्ध किया जाता है। भजन कीर्तन, उपदेश हरि चर्चा आदि से पूर्ण होती है यह यात्राएँ। देखने मे लगता है कि यह एक छोटा सा नगर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण कर रहा हो।

जिस प्रकार ब्रज क्षेत्र मे वनो की कमी नही थी उसी प्रकार कुडो की भी। आज भी बहुत से कुड इस क्षेत्र मे पाये जाते है पर उनका रखरखाव ठीक नही है। इसके अतिरिक्त इन मे पानी का स्तर भी कम है और जगह–जगह गन्दे नालो का पानी भी इस मे मिल गया है। प्रमुख कुड है– शातनुकुड मधुकुड कृष्ण कुड, राधाकुड, सकर्षण कुड गोबनद कुड आसग कुड सरभी कुड, हरजी कुड, रूदकुड बिलछूकुड गुलाल कुड विमला कुड धर्मकुड, दावानल कुड आदि। अधिक्तर कुड एक या दो धार्मिक या लौकिक कथाओ से सम्बन्ध रखते है। ये वे पानी के स्रोत है जो पुरातन काल मे दैनिक जीवन के कार्यो मे काम आते थे।

मथुरा के बाद दूसरा अति प्राचीन व प्रसिद्ध धार्मिक स्थल **गोबर्धन** है। इसके महत्व का पूर्ण आधार गिरिराज की पहाडियाँ है जिस को कृष्ण ने अपनी छोटी अगुली की सहायता से उठा लिया था और गोप–ग्वाले व ग्वालिनो को इन्द्र के प्रकोप से बचा लिया था। गिरिराज पहाडी की एक अन्य नाम अन्नकूट भी है। यह मथुरा नगर से केवल 13 मील दूर है। गोवर्धन के दर्शनीय स्थलो मे मानसी गगा श्री हरिदेव जी का मदिर, श्री लक्ष्मीनारायण का देवस्थान, श्री चक्रेश्वर महादेव का मदिर, नीम गाँव, मानसा देवी चन्द्र सरोवर, गोविन्द कुड सकर्षण कुड आदि प्रमुख है।

बरसाना

यह ब्रज का अत्यन्त रमणीक और पुनीत धार्मिक स्थल है। राधा जी का यह जन्म स्थान है बरसाना के आस–पास अनेको छोटी–छोटी पहाडियाँ है। जहाँ पर छोटे–छोटे गाँव बसे हुये है। इसके एक ओर नन्द गाव तथा दूसरी ओर कामबन की पहाडिया है। राधाकृष्ण की बाल–क्रीडाओ का कमनीय केन्द्र होने के कारण बरसाना और नन्दगाव का निकटवर्ती क्षेत्र ब्रज का हृदय स्थल है। लाडली जी का मदिर मोरकुटी सुनहरा की कदमखडी, भानोखर या वृषभानु सरोवर आदि अनेको दर्शनीय स्थल है। बरसाने मे कई मेले और उत्सव होते है जिसमे अष्टमी का उत्सव व होली का मेला प्रमुख है। होली का मेला तो लठामार होली की वजह से जगप्रसिद्ध है। ब्रज की साझी कला का सुन्दर स्वरूप रग की साझी जल की साँझी, गोबर की साझी फूलो की साझी, कोडियो की साँझी आदि के रूप मे बरसाने मे देखने को आज भी मिलती है। अश्विन मास का प्रतिपक्ष साझी के सुन्दर चित्रमय ससार से आप को मोह लेगा।

नदगाव

श्रीकृष्ण का बाल्यकाल यहाँ ही बीता था यह उनके पिता नन्दराम जी का गाव है कभी यहा यमुना नदी का प्रवाह था। आज यह रूद्र पहाडी के चारो ओर बसा हुआ छोटा सा गाव है। यहा का श्री नन्दराम का मदिर देखने योग्य है जिसमे श्रीकृष्ण बलदेव जी नन्दराम जी और यशोदा जी की मूर्तियाँ है। नन्दीश्वर एक प्राण दो देह बूढे बाबू पावन सरोवर खादिर बन, उद्व क्यारी आदि प्रमुख दर्शनीय स्थल है जो आज भी उस समय की याद दिला जाते है।

बृदावन

वारहा पुराण के आधार पर कहा जा सकता है कि प्राचीन काल मे यहाँ एक सघन वन था जो कि बृ दादेवी द्वारा रक्षित था। "बृन्दा" शब्द से कई अभिप्राय लिए गए है।

1 तुलसी

2 केदार राजा की कन्या जो श्रीकृष्ण को पति रूप मे पाना चाहती थी। ब्रह्मवैवर्त पुराणोक्त मे इसकी कथा लिखा है।

3 राधा के सोलह नामो मे से एक नाम बृदा भी था,

4 राधा की एक अतरगा सखी का नाम बृदा था तथा

5 के अनुसार बौद्ध साहित्य मे उल्लेखित एक यक्षी का नाम बृ दा था। बदावन का नाम किसी भी कारण पडा हो पर है यह वह स्थान है जहा राधाकृष्ण लीलाएँ करते थे। बृदावन को वर्तमान स्वरूप का श्रेय सर्वश्री चैतन्य महाप्रभु हितहरिवश और स्वामी हरिदास जी के धार्मिक सम्प्रदायो को जाता है। चीरघाट, नन्दघाट, कालियादह, वशीवट, श्रगारवट, दावानल कुड, केशीघाट आदि बृदावन के वे श्रीकृष्ण लीला स्थल है जो आज भी भक्तजनो द्वारा पूजनीय है। बृ दावन को मदिरो का शहर कहा जाए तब कोई अतिशियोक्ति नही होगी। यहाँ पर छोटे बडे तमाम मदिरो का निर्माण न केवल हिन्दु राजा महाराजा, सेठ व भक्तजनो द्वारा ही करवाया गया वरन् मुसलमान शासको जैसे अकबर व जहाँगीर ने भी करवाया। इसलिए यहाँ एक भव्य मदिर का निर्माण विदेशो मे बसने वाले श्रीकृष्ण के भक्त योरोपियन लोगो ने भी किया है। श्रीकृष्ण के ये भक्त चाहे भारत की जनता के लिए विदेशी अवश्य हो-पर है कृष्णमय। बृ दावन मे श्री गोबिन्द देव जी श्री मदन मोहन जी श्री गोपीनाथ जी श्री युगल किशोर जी, श्री राधावल्लभ जी, श्री राधादामोदर जी, रग जी का मदिर, ब्रह्मचारी जी का मदिर तथा श्री रसिक बिहारी जी और श्री बाके बिहारी जी के मदिर देखने योग्य है। यह सभी स्थल और मदिर वर्षो का इतिहास समेटे हुए हैं।

बलदेव

इसका पुराना नाम रीढा है किन्तु अब बलदेव कहलाता है। यहाँ के श्री बलदेव जी के मदिर मे श्री दाऊजी और रेवती जी की सुन्दर विशाल मूर्तियाँ है। ब्रजमडल की वर्तमान उपास्य मूर्तियो मे बलदेव जी की यह मूर्ति कदाचित सबसे प्राचीन है। यो तो इस मदिर मे पूजा करने सभी जातियाँ आती है पर जाटव जाति इन्हे अपना मुख्य देवता मानती है इनका भोग माखन मिश्री व भाग से लगाया जाता है।

गोकुल

अत्यत प्राचीनप काल मे यह एक विशाल सघन बन था जो यमुना पार वर्तमान के दुर्वासा आश्रम तक विस्तृत था। वर्तमान गोकुल को प्रकाश मे लाने का श्रेय श्रीमन्महाप्रभु बल्लभाचार्य जी को है। श्रीकृष्ण की अनेकानेक लीला स्थलियो मे गोकुल का स्थान अद्वितीय है। मोरवाला मदिर कटरा वाला मदिर, दाउजी का मदिर, गगावेटी जी का मदिर श्री मधुरेश जी का मदिर, कामवन वाला मदिर बहु जी मदिर-मदिरो मे तथा गोबिन्द घाट, ठकुरानी घाट, रसखान टीला, अलिखान पठान टीला अन्य दर्शनीय स्थलो मे प्रसिद्ध है। गोकुल की कृष्णमयी भूमि मे बहुत से मुसलमान भक्तो को अपनी ओर खीचा है। जिसमे कवि रसखान, अलिखान पठान, हमीदा और हसीना बहने और भक्तमती ताज प्रमुख है। रसखान के प्रेम गीतो की गाथा को सचमुच आज भी गोकुल की गलियो व लीला स्थल अपने आप मे समेटे हुए है।

ब्रजप्रदेश जिस का अधिकाश भाग कभी बनो से ढका था आज भी विभिन्न प्रकार के पेडो का प्रदेश है। कदम्ब, पलाश, तमाल छोकर, करील, सेमल, भाऊ, पीपल व बड के पेड यहा

बहुत पाये जाते है। फूलो मे कुमुद का स्थान सर्वोपरि है भूमि अलकरण मे इस का तरह-तरह से उयोग किया जाता है। सेमल, कदम्ब पलाश आदि के फूल वाले पेड हजारो की सख्या मे चिडियो को अपनी ओर बुलाते है। करील व भाऊ की कुजे अतीत का राधा-कृष्ण के साथ प्रस्तुत कर देते है। बृजप्रदेश मे बृदा अर्थात तुलसी के पौधो का भी बाहुल्य है मीलो तक तुलसी के पोधो की छटा वर्षा ऋतु के पश्चात देखते ही बनती है। दूर तक फैले हुए खेत छोटी-छोटी पहाडियॉ, पेडो के झुड विभिन्न आकारो के कुड तथा उसमे खिलते कुमुद झुड के झुड गायो का घूमना छोटे-बडे मदिर घाटी पर जमती लोगो की भीड, माध्य बला मे मदिरो से आती हुई घटियो की झनकार, भजन और-कीर्तन की स्वर लहरियॉ और बृज यात्रा पर जाते हुए असख्य मामान्यजन महापुरूष माधु-सन्यासी, भक्तजन, देशी और परदेशी पर्यटक आज के बृज प्रदेश का वह रूप है जिससे आप भी कुछ देर के लिए प्रभावित हो जाएगे। अभी भी ब्रज की भूमि मे वह कशिश शेष है जो आप को अपने यहा बार-बार आने का निमत्रण देगी।

ब्रज प्रदेश के अधिकाश क्षेत्रो मे ओद्योगिक चेतना आई है। कपडे की छपाई तुलसी की लकडी की कठ मालाए-कदम्ब वृक्ष की लकडी से कलात्मक समान टेराकोटा और पेपर मशी के खिलोने सोने चॉदी क जेवर भगवान की पीतल की मूर्तियॉ, भगवान को सजाने के लिए मुकुट व तरह-तरह के आभूषण, कपडे, मदिरो को सजाने के लिए केले के पत्तो पर बनाई गई साझी, विशेष अवसरो पर मदिरो को सजाने का सामान-रामलीला व रासलीला का सामान, तरह-तरह के मुखौटे तथा प्रसाद व पूजा की सामग्री व मिठाइयॉ यहॉ की वे कलाए जिन्होने ब्रजप्रदेश को रूप, मान व सम्मान दिलाया है। औद्योगिककरण के गुण व दोष भी यहॉ देखने को मिलते है दिल्ली के निकट होने के कारण आधुनिक युग के अच्छे व बुरे प्रभावो से भी ब्रजप्रदेश वचित नही है ब्रजप्रदेश का केन्द्र है मथुरा जिसमे देखने योग्य अनेक स्थान है। इस शहर मे देखने योग्य लगभग 57 मदिर व 25 घाट हे। मथुरा सग्राहलय और श्रीकृष्ण जन्मभूमि अन्य देखने योग्य स्थान है। मथुरा सग्राहलय मे कुशान व गुप्ता काल की अनेको मूर्तियो व शाल भजिकाओ का सग्रह है। कभी यह प्रदेश हिन्दू, बौद्ध व जैन धर्मो का सगम रहा था। पुरातत्व महत्व के यहॉ बहुत से स्थान है जिस मे कनक टीला, कटरा केशव देवा, जमालपुर, चौबारा, भूतेश्वर बलभद्र कुड पालीखेरा महोली, इसादुर, महाबन, बृन्दावन, सोख चौरसी प्रमुख है। समय-समय पर खुदाई करके बहुत सा सामान निकाला गया जो कि मथुरा सग्राहलय मे सग्रहीत है। पुरातात्विक दृष्टि से स्पष्ट है कि एक समय मे मथुरा स्थापत्यशैली की दुन्दुभी समस्त भारत मे बजती थी।

बृज प्रदेश के प्रमुख तीज त्यौहार व उत्सव

भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसकी अधिकाश जनता गावो मे रहती है। बृज प्रदेश मे भी ऐसा ही है इसलिए इस प्रदेश मे मनाये जाने वाले अधिकाश त्यौहार या तो कृष्ण से सबधित है या फिर कृषि सबधी।। कुछ ऋतु परिवर्तन और लोक देवी-देवताओ के लिए भी मनाये जाते है। बृज मे लगभग पूरे वर्ष मे 50 से ऊपर त्यौहार मनाये जाते है और इनमे से कुछ से सबधित मेले भी लगते है। इसके साथ ही साथ कृष्ण लीलाओ का आयोजन भी होता है जो उत्तर प्रदेश के अन्य भागो मे बहुत ही कम होता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक अमावस्या, पूर्णमासी, एकादशी को उपवास, यमुना के स्नान और दीपदान का क्रम भी चलता रहता है। बृज के कुछ मेलो को देखने बाहर से पर्यटक गण भी आते है और बरसाने की लट्ठमार होली को देखने के लिए देशी व विदेशी पर्यटको का ताता भी लगा रहता है। रग-गुलाल से सरोबोर होकर पुरूषो को स्त्रियो द्वारा डडे से पिटते देखने विदेशी पर्यटको को आश्चर्य चकित कर देता है और उनमे से बहुतेरे होली खेलने उसी भीड मे शामिल हो जाते हैं।

बृज-प्रदेश के समस्त त्यौहार हिन्दु कलैंडर के अनुसार मनाये जाते है। त्यौहारो या उत्सवो का आरभ चैत्रमास के शुक्ल पक्ष से शुरू होता है। इसके बाद तो त्यौहारो व उत्सवो का सिलसिला जो शुरू होता है वह चलता ही रहता है। हिन्दू माह चन्द्रमा के घूमने से सबधित है जिस मे दो पक्ष होते है कृष्ण पक्ष व शुक्ल पक्ष। कृष्ण पक्ष मे चन्द्रमा का आकार घटता जाता हैं और पद्रहवे दिन पूर्ण लुप्त हो जाता है जिस को अमावस्या कहते हैं। इसी तरह अमावस्या के दूसरे दिन से चन्द्रमा की कलाएं बढती जाती हैं साथ-ही-साथ पृथ्वी पर पहुचने वाली उस की शीतल चॉदनी भी। पूर्णमासी जो कि शुक्ल पक्ष का आखिरी दिन होता है चन्द्रमा अपने पूरे आकार मे नभ पर इतराता दिखता है। अधिकाश तीज-त्यौहार शुक्ल पक्ष मे मनाये जाते हैं।

कुछ माहो मे अधिक त्यौहार होते है और कुछ मे कम। सावन, भादो, क्वार, कार्तिक और फाल्गुन के माह मे अधिकाश त्यौहार मनाये जाते है। चैत्र मास मे यमुना षष्ठी, दुर्गा अष्ठमी, रामनवमी, बैसाख मास मे नरसिह उत्सव, बन विहार, ज्येष्ठ मास मे ज्येष्ठ दशहरा व जल यात्रा, आषाढ मे रथ यात्रा और व्यास पूर्णिमा, श्रावण मे हरियाली तीज, व सभी मदिरो के हिण्डोले, झूले और झॉकियॉ, पच तीर्थ, रक्षा बन्धन आदि, भादो मे कृष्णजन्माष्ठमी, राधाअष्ठमी, दान लीला, अनन्त चर्तुदशी, क्वार माह मे विजयादशमी, साझी, न्यौराता, टेसू व साझी, कार्तिक मे दीपावली, अन्नकूट, भाईदूज (यमद्वितीया) धोबीबध, गौचरण, अक्षयनवमी, कस-वध, देवोत्थान इकादशी तथा अनेको यात्राएॅ, दीपदान, यमुना स्नान, करवा चौथ, अहोई अष्ठमी, नरक चौदश-माघ मास मे बसन्त-पचमी और फाल्गुन मे महाशिव रात्रि, होलिका उत्सव (होली) सोमवती अमावस्या ये वे त्यौहार है जिनमे अधिकाश जनता भाग लेती है।

चैत्रमास

इस मास के शुक्ल पक्ष के छठ को यमुना जी का महोत्सव मनाया जाता है जिन का मुख्य उद्देश्य यमुना के घाटो की सफाई व सजाना होता है। यमुना स्नान व पूजा के लिए आते है कभी इस दिन यमुना के घाटो और आस-पास के मदिरो को दुल्हन की भॉति सजा दिया जाते थे।

असल मे चैत्रमास का आरम्भ ही नवरात्रि से होता है जिसमे देवी की आराधना और घर-घर मगल घट रखकर देवी का आह्वान होता है। व्रत व पूजन किया जाता है। भूमि अलकरण देवी सबधी मगलघट के आस-पास बनाये है। लोग उपवास रखते और कीर्तन भजन करते है। जमुना स्नान भी किया जाता है। चैत्रमास की शुल्क पक्ष की अष्ठमी की समस्त देवी मदिरो पर उत्सव मनाये जाते हैं महाविद्या देवी के मदिर पर बहुत बडा मेला लगता है चामुडा, चर्चिका, पथवारी और सभी मदिरो मे फूलडोल एव मेला लगता है। हलवे व चने का प्रसाद बाटा जाता है देवी को लाल चुन्नी भी पहनाई जाती है।

इसी मास का एक अन्य त्यौहार रामनवमी है जो नवरात्रि का आखिरी दिन है इस दिन मदिरो मे राम उत्सव मनाया जाता है। सान्ध्य बेला मे मेला भी लगाया जाता है। रामभक्त इस दिन रामायण

का पाठ करते है तथा राम की पूजा करते है। इस दिन रामजी के मदिर का उत्सव श्रेष्ठ होता है।

चैत्र मास का एक ओर उत्सव शुक्ल पक्ष की चौदस के दिन नरसिह लीला के रूप मे मनाया जाता है। सपूर्ण बृज-प्रदेश मे स्थान-स्थान पर नरसिह लीला का आयोजन होता है जिसमे सतघडा, गोलपाडा, मानिक चौक, कुआवाली गली एव द्वारिकाधीश मदिर की नरसिह लीला दर्शनीय होती है। इसी मास का एक अन्य त्यौहार बृज के राजस्थान के समीपवर्ती क्षेत्र मे अक्षय तीज के रूप मे मनाया जाता है।

बैसाख

चैत्रमास से ग्रीष्म ऋतु अपना रग जमाने लगती है। सपूर्ण प्राणी जगत प्रभावित होता है नदियो का जल स्तर गिरने लगता है कुड सूखने लगते है और सर्वश्री बिखरी हरियाली का स्थान सूखे पत्ते ले लेते हैं। गर्म हवाएँ, चलने लगती हैं और दिन भर मनुष्य घरो मे रहना पसन्द करता है। ब्रज मे इस मास मे सान्ध्य बेला मे छोटी-छोटी यात्राएँ (परिक्रमा) करने का प्रचलन है क्योकि इस समय दिनभर की गर्मी से कुछ राहत मिल जाती हैं। यो भी दिनभर आलस मे पडे रहने के बाद ये यात्राएँ स्वास्थ्य लाभ के लिए बहुत सुन्दर अवसर प्रदान करती हैं।

ज्येष्ठ मास

यह मास अपनी तपन के लिए प्रसिद्ध है। पानी की अत्यन्त कमी, धूल भरी गर्म हवाएँ इस मास की विशेषता है। हर समय हर व्यक्ति स्नान करने और अपने को ठडा रखने के प्रयास मे लगा होता है इसीलिए शायद हमारे पुरखो ने इस मास मे स्नान और बृक्ष पूजा का महत्व व पूजन ही अधिक उपयुक्त समझा था। इस मास का मुख्य त्यौहार ज्येष्ठ दशहरे का है जिसमे लाखो की सख्या मे लोग गगा और यमुना या अन्य नदी-तालाबो मे स्नान करते है। मथुरा मे दशाश्वमेघ घाट पर विशेष रूप से स्नान का महत्व है इस त्यौहार का सीधा सबध राजा भागीरथ की तपस्या और शकर जी द्वारा गगा की शीश पर धारण कर स्वर्ग से पृथ्वी पर लाने की कथा से है। इस मास के अन्य त्यौहार वट सावित्रि और बड अमावस्या है। इन त्यौहारो का सबध सावित्री-सत्यवान की पौराणिक गाथा से है। पीपल और वट बृक्षो की पूजा की जाती है। वृक्षो के चारो तरफ पीला धागा सात बार बाधा जाता है तथा स्त्रियॉ श्रृगार के साथ पीपल वृक्ष की पूजा करती हैं। बायना निकाला जाता है जिस को कुछ रूपयो के साथ मान्य (सास, ननद या जिठानी) को घर की बहू देती है। सौभाग्य व पति की दीर्घायु होने की कामना के लिए यह त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन उपवास भी रखा जाता है। भिगोये हुए चने तथा बड या पीपल का फल खाने का भी विधान है।

ज्येष्ठ मास के इन त्यौहारो के आधार पर कहा जा सकता कि हमारे यहा वृक्षो की रक्षा करने की कितनी सुन्दर परम्परा विद्यमान थी। सघन बृक्षो की साया तथा उनका सभी प्राणी जगत को आश्रय देने का अहसास ही वृक्ष पूजा की शुरूआत थी। वातावरण की शुद्धता के लिए वृक्षो का कितना महत्व है यह अब हम सब से छुपा नही है। ब्रज की वन-सम्पदा अगर बनो और उपवनो के रूप मे वैसी ही बनी रहती तब मथुरा व आसपास के क्षेत्रो की जलवायु आज कुछ और होती और राजस्थान की तरफ से बढता हुआ रेगिस्तान का गर्म प्रवाह हमारी जलवायु, जलस्तर और वनस्पति को क्षति न पहुचा पाता।

आषाढ़ मास

आषाढ मास के आते ही आकाश मे विचरण करते सलेटी भूरे और काले रग के पानी से भरे बादलो को देखा जा सकता है। तीन महीनो से लगातार तपती हुई भूमि की थोडी राहत मिल जाती है पुरवा हवा का चलना मन-प्राण मे एक नया जीवन सजो जाती है। पेड पौधे जो गर्मी के कारण मुरझा जाते है फिर से जी उठते है-चातक, पपीहा, मोर, दादुर खुशी से नाच उठते है। इस मास का प्रथम त्यौहार हरिशयनी एकादशी नाम से देवालयो मे मनाया जाता है इस दिन से श्रीविष्णु भगवान श्रीरसागर मे चार माह के लिए सोने के लिए चले जाते है। इन चार माहो मे शुभ कार्यो की मनाई है विशेषकर विवाह आदि की। बरसात की वजह से एक जगह से दूसरी जगह जाना आसान नही होता। नदी, तालाब, उफनने लगते है ओर सर्वत्र गदगी का सामराज्य होता है। मेले तमाशे इस माह मे कम होते है केवल व्रत उपवास ही किए जाते हैं। यह त्यौहार आत्मचितन और आत्मशुद्धि के दिन के रूप मे ही मनाने का अधिक विधान है। दिनभर उपवास व रात्रि को भजन कीर्तन ही अधिक प्रचलित है।

इस मास का दूसरा त्यौहार “व्यास पूर्णिमा” है यह गुरू पूर्णिमा के नाम से भी जानी जाती है। जहॉ कही भी गुरूकुल है

वहा पर यह आज भी मनाई जाती है। इस दिन प्राचीन काल मे आचार्य की पूजा करके यथाशक्ति दक्षिणा देते थे और आर्शीवाद पाते थे। इस दिन मथुरा की परिक्रमा करते है। श्री गोवर्धन की भी परिक्रमा का यह विशेष पर्व है। लोग मदिर दर्शन के लिए जाते है।

श्रावण(सावन)

आषाढ के बाद सावन का महीना आता हैं "साबन सुहाना माह आयो रे" के गीतो की स्वर लहरियॉ वायुमडल मे तैरने लगती है। धरती काफी ठडी हो जाती है और धानी चुनरियॉ पहन कर उत्सव मनाने को तैयार। सपूर्ण प्रकृति धुली-धुली साफ-सुथरी, रह-रह कर वर्षा की फुहारे, नन्ही-नन्ही बुदियो के साथ झूले की बहार मानव को रस और रग फुहारो मे अन्दर तक भिगो जाती है। वर्षा गीत, रसिया, तीजो के गीतो की धुने राह चलते लोगो को मोह लेती है। पृथ्वी के नीचे के जीव जन्तु (साप) अपने बिलो मे पानी भर जाने के कारण पृथ्वी पर विचरण करने लगते है और जाने अनजाने लोगो को काट लेते है। ऐसे मे ब्रज प्रदेश नागपचमी की त्यौहार मनाता है। घर को स्त्रियॉ दीवालो पर नागो का चित्रण करके दूध लावा रोली अक्षत से पूजा करती है नागो के दर्शन करती हैं और नागपचमी को कथा सुनती हैं। सडको पर नागो को पिटारी मे भरे हुए बहुत से सपेरे घूमते रहते है तथा दान पाते है। नागपचमी की पूजा के पीछे सर्प से कटने और मरने का ही डर नही है सरन् साप कृषको का मित्र है। फसल की प्राप्ति के लिए चूहो को खेत से हटाना पडता है वह काम सॉप उसको अपना भोजन बनाकर बहुत आसानी से करता है। कृषि प्रधान देश मे इसीलिए सर्पपूजा होती है। वैसे भी साप बहुत शर्मीला जन्तु है बगैर किसी कारण के वह किसी को काटता नही। हमारे सभी धर्मो मे सापो का बहुत महत्व है। ब्रज प्रदेश मे इस दिन से धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ हो जाते है जो पाच दिन तक लगातार चलते रहते है। पहले दिन मधुवन यात्रा दूसरे दिन शातुन कुड यात्रा, तीसरे दिन गोकर्ण महादेव यात्रा, चौथे दिन गरूड गोविन्द यात्रा और पाचवे दिन ब्रह्मकुड बृन्दावन यात्रा होती है।

श्रावण का एक ओर लोकप्रिय त्यौहार **श्रावणी** नाम से ब्रज प्रदेश मे मनाया जाता है। इस दिन बहने भाइयो को राखी बाधती है। समस्त मदिरो मे विशेष झॉकिया एव हिडोले पडते हैं और द्वारिकाधीश मदिर मे श्वेत घटा के दर्शन करने को हजारो की सख्या मे लोग आते है। भूतेश्वर पर मेला लगता है। पहलवानो की कुश्ती के दगलो का भी जगह-जगह आयोजन होता है। राखी का त्यौहार का सबध देवता और असुरो के युद्ध से है जिस मे इन्द्राणी ने इन्द्र के हाथ मे रक्षा के धागे बाधकर उन्हे शत्रु के आक्रमणो से सुरक्षित किया था। पुराने समय मे योद्धा अपनी पत्नी या बहन से अपने हाथो मे राखी बधवा कर जाते थे राजपूत काल मे यह भावना प्रचड रूप से थी। आज भी बहन भाई को, पडित अपने यजमानो को तथा काम करने वाले अपने मालिक के हाथ मे राखी बाधते हैं। लीक मे इसदिन श्रवण कुमार के चित्र बना कर पूजा होती है और कहानी सुनी जाती है।

भादों

वर्षा का आरम्भ अवश्य आषाढ मास के काले बादल करते हैं पर वर्षा अपनी फुहारो से भादो मास मे भी धरती को भिगोये रहती हैं। गर्मी कुछ-कुछ कम पडने लगती है, कमरो के भीतर अच्छा लगता है पर काले कजियारे बादलो की घटाये घिरती और बरसती रहती है। बृज-प्रदेश के बन-उपवन पहाडियॉ नदी-तालाब हरे-भरे और पानी से भर जाते है यह माह श्रीकृष्ण-राधा का माह है इस माह मे दो मुख्य त्यौहार **कृष्णाजन्माष्टमी** और **राधाष्टमी** है जो क्रमश भाद्र माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी और शुक्ल पक्ष को अष्टमी को मनाये जाते हैं। **कृष्णाजन्माष्टमी** को ब्रज प्रदेश के समस्त मदिरो मे श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाया जाता है। रात्रि के बारह बजे विशेष दर्शन होते हैं घरो मे लोग श्रीकृष्ण लीला की झाकी सजाते हैं। श्रीकृष्ण जन्म भूमि मे कृष्ण लीला का आयोजन होता है। इन दिन मथुरा व आसपास के क्षेत्रो के मदिरो मे श्रीकृष्ण दर्शन के लिए भीड जमा हो जाती हैं। मदिरो को खूब सजाया जाता है- मदिरो व मदिरो की तरफ जाने वाली सडको व गलियो मे मानव समूह का अथाह समुद्र लहराता दिखाई पडता है। भगवान का भोग लगाने और पूजा के बाद खाने के लिए तरह-तरह के पकवान घरो व देवालयो मे तैयार किए जाते हैं। दिनभर बच्चा-बच्चा उपवास रखता है। मदिरो मे यह उत्सव सुन्दर झॉकी के रूप मे भी मनाया जाता है। ब्रज प्रदेश का इससे अधिक लोकप्रिय और कोई त्यौहार नही है। श्रीकृष्ण जन्मभूमि, द्वारिकाधीश का मदिर और बृदावन के अनेको मदिरो के कृष्ण जन्मोत्सव को देखने लाखो की सख्या मे लोग जमा हो जाते हैं।

राधाअष्टमी दूसरा लोकप्रिय उत्सव है जिसे मथुरा की अपेक्षाकृत बरसाने मे बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। कृष्ण लीलाओ का मचन और मदिरो को सजाकर राधा प्यारी का जन्मोत्सव सारे ब्रज प्रदेश मे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

भाद्र माह का एक अन्य त्यौहार शिव परिवार से जुडा है जो **गणेश चतुर्थी** के नाम से मदिरो मे मनाया जाता है यो तो गणेश जी सपूर्ण भारत मे सब से अधिक लोकप्रिय देवता है पर ब्रज मे इस उत्सव का उतना सुन्दर रूप देखने को नही मिलता जितना महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु मे। गणेश जी की प्रतिमा मिट्टी, सुपारी, आटे से लेकर अष्ट धातुओ की भी बनती है और प्रत्येक शुभ कार्य मे इनकी मूर्ति या चित्र होना आवश्यक है मथुरा मे भी घरो के मुख्य दीवार के ऊपर यदा कदा इन का चित्र बना हुआ दिखाई पडेगा। गणेश जी को बुद्धि-सिद्धि का देवता माना जाता है और विघ्न निवारक के रूप मे वह लोकप्रिय है इनकी पूजा 21 लड्डू से की जाती है। धूप, दीप, नवैद्य, आचमन, ताम्बूल और दक्षिणा देने के बाद आरती उतारने की प्रथा हैं। गुप्तकालीन मूर्तिकला मे गणेश जी अपने वाहन चूहे के साथ विद्यमान हैं जो कि मथुरा सग्राहलय मे सग्रहीत है। आज से लगभग 5000 वर्ष पहले भी इन की पूजा होती थी ऐसा ही ऐतिहासिक ग्रथो से पता चलता हैं।

इसके अतिरिक्त भाद्र मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को मधुवन, तालवन और कुमुदवन की परिक्रमा होती है। पुष्टि मार्गीय गोसाई अपनी ब्रज यात्रा का आरम्भ इस दिन से करते है। अन्नत चतुर्दशी को दाऊ जी के मदिर मे उत्सव मनाया जाता है। ब्राह्मण समुदाय मे इस त्यौहार का अधिक महत्व है।

आश्विन (क्वार) मास

यह एक ऐसा महीना है जिस का कृष्ण पक्ष **पितरो** को समर्पित है। मृत्युतिथि के अनुसार लोग अपने पितरो को तिलाजलि देते हैं, ब्रह्मभोज का आयोजन करते है, और गरीबो को दान देते है। पितृपक्ष का आखिरी दिन (अमावस्या) महालय के नाम से जाना जाता है।

आश्विन मास (क्वार) के शुक्ल पक्ष के प्रथम नौ दिन **शारदीय नवरात्रि** के नाम से जाने जाते है। प्रथम दिन घर के एक कोने मे मगलघट की स्थापना करके भूमि अलकरण से स्थान को सजा दिया जाता है और घट पर ऊ या स्वास्तिक हल्दी या रोली से लिख दिया जाता है। घट के मु ह पर ताँबे का एक लोटा पानी से भर रख दिया जाता है और उसके ढक्कन मे जौ भर दिए जाते है जिस के ऊपर जलता हुआ दीपक होता है। घडे की गर्दन को आम, पीपल व अशोक की पत्तियो का हार पहना दिया जाता है। तत्पश्चात खेतो से मिट्टी लाकर घडे के आस-पास बिखरा दी जाती है और उसमे राख मिला कर जौ बिखरा दिए जाते है। रोज सुबह-शाम पूजा करके पानी डाला जाता है। नौ दिन तक यह क्रम चलता है जिससे जौ के दानो मे से छोटी छोटी बालिया निकल आती है।

इसके अतिरिक्त अष्टमी को दुर्गा की मूर्ति की पूजा होती है तथा दीवाल पर देवी के अलकरण बनाये जाते है। क्वारी कन्याओ को अष्टमी के दिन खाना खिलाया जाता है। इस समय देवी के गीतो की धूम मची होती है "लागुरिया" को गाते हुए लोग जगह-जगह आपको दिखाई देगे। भगवती के विभिन्न रूप मे पूजे जाते हैं। दो वर्ष की लडकी कुआ री, तीन वर्ष की त्रिमूर्तिनी, चार वर्ष की कल्याणी, पॉच वर्ष की रोहणी, 6 वर्ष की काली, 7 वर्ष की चडिका, आठ वर्ष की शाम्भवी नव वर्ष की दुर्गा और दस वर्ष की सुभद्रा स्वरूप मानी जाती है। इससे अधिक वर्ष की कन्या कुमारी पूजा मे सम्मिलित नही होती है। यह त्यौहार सभी जातियो द्वारा श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है।

दशमी को दशहरे का उत्सव मनाया जाता है रामलीला की समाप्ति रावण वध के बाद हो जाती है। इसदिन बहन भाई का टीका भी करती है तथा उसके कानो मे जौ बालियॉ लगाती है। घरो और देवालयो मे राम और रामायण की विधिवत् पूजा होती है। इस दिन शाम को मेला भी लगता है। दशहरे के दिन ही न्यौरता, देवी पूजन का सामान, साझी और टेसू आदि के सामान को नदियो मे प्रवाहित कर दिया जाता है।

आश्विन मास का आखिरी त्यौहार **शदर पूर्णिमा** हैं। जिस मे जगह-जगह रासलीला का आयोजन होता है एक बार फिर से सपूर्ण ब्रज प्रदेश कृष्ण और राधामय हो जाता है। घरो मे लक्ष्मी पूजन भी किया जाता है और दूध की खीर बना कर आगन मे रख दी जाती है। लोक मे विश्वास है कि इस दिन अमृत बरसता है। जिस को शरीर मे जाना चाहिए और इसीलिए इस खीर को सुबह दूसरे दिन खाया जाता है। इस दिन आकाश मे आकाश गगा देखते ही बनती है। ऊपर खुला साफ सुथरा नीला आकाश और

उस मे चमकते असख्य तारे तथा पृथ्वी पर राधा-कृष्ण की रास लीला की रौनक ब्रज प्रदेश को स्वर्गलोक से भी सुन्दर स्वरूप प्रदान करती है।

कार्तिक मास

कार्तिक मास के आरम्भ होते ही सर्दी का आरम्भ हो जाता हे। हल्की-हल्की ठडी ब्यार चलती है और मनप्राण मे नई स्फूर्ति भर देती है। राते ठडी तथा दिन मे सुहावनी गर्मी। ऐसे मे कुछ स्त्रियो के लोकप्रिय त्यौहार बृज प्रदेश मे मनाये जाते हे। करवा चोथ ओर अहोई अष्टमी सुहागिन स्त्रियो के त्यौहार है। करवा चौथ कृष्ण पक्ष की चौथ को मनाया जाता है इस की तैयारी करीब आठ दिन पूर्व से आरम्भ की जाती है स्त्रियॉ व लडकियॉ दीवालो पर चौथ माता का चित्र बनाती है व इससे सबधित कथा सुनती है। कुछ लोग गोबर से दीवाल पोत कर चावल के पीठे से चित्र बनाती है और कुछ सफेद दीवाल पर विभिन्न रगो से। कथा सबधी सभी वस्तुओ जैसे करवा, दोरानी, जिठानी भाई, स्वास्तिक, तुलसी का **लिखा,** चिडियॉ, कमल का फूल, छलनी से चॉद दिखाते भाई और नसैनी पर चढकर देखती हुई बहन, सूर्य और चन्द्रमा आदि। करवाचौथ के दिन चन्द्रमा देखने और उसको अर्घ्य चढाने के बाद चौथ माता की विधिवत् पूजा की जाती है और चौथ माता से कहानी सुनने के बाद अमर सुहाग की प्रार्थना की जाती है। बृज प्रदेश मे चतुर्वेदी व बनियो मे यह त्यौहार बहुत ही कम लोकप्रिय है पर अन्य जातियॉ मनाती है। वास्तव मे इस क्षेत्र का लोकप्रिय त्योहार **अहोई अष्टमी** है जिसे अधिक लोग मनाते हैं। इसकी तैयारी भी करीब एक हफ्ते पहले से की जाती है। इस त्यौहार मे भी स्त्रियॉ अहोई देवी का चित्र गेरू से दीवाल पर बनाती हैं अगर घर मे एक सुहागिन पुत्रवती स्त्री अहोई अष्टमी की पूजा कर रही है तब एक मु ह वाली अहोई अष्टमी और अगर दो पुत्रवती स्त्रियॉ त्यौहार को मना रही है तब दो मु ह वाली अहोई माता का चित्र बनाया जाता है। चित्र मे सात आदमी, सात औरते, सूर्य, चन्द्रमा, स्वास्तिक, चौपड चौक, मोर, तोता स्याऊ व उसके बच्चे बनाये जाते है। दिनभर उपवास रखकर रात्रि मे तारे व चन्द्रमा देखकर व्रत खोला जाता है और पूजा करने के बाद खाना खाया जाता है। अहोई माता का चॉदी का चित्र बनवाकर धागे मे पिरोकर पहनने का भी रिवाज है जिस मे प्रत्येक साल चॉदी के दो दाने बढा दिए जाते है। अहोई व करवाचौथ की कहानियॉ अनजाने मे सच बोलने और जीव रक्षा का पाठ पढा जाती है। मिल जुलकर रहना और बडो का सम्मान करना भी लोक कथाए सिखाती है।

स्त्रियो के इन त्यौहारो के बाद कार्तिक के कृष्ण पक्ष की त्रियोदसी को धनतेरस का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन यम की पूजा होती है और उसको खुश रखने के लिए शाम को दीप जलाये जाते है तथा यमुना किनारे दीपदान किया जाता है। दूसरे दिन **चौदस** को कुछ लोग पटले पर घी से श्रीकृष्ण का चित्र बना कर पूजा करते है क्योकि इस दिन श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध किया था। नये कपडे व बर्तन खरीदना इस दिन शुभ माना जाता है। घर बाहर, गोशाला आदि की सफाई की जाती है और घरो दुकानो की भित्ति व भूमि अलकरणो से सजाया जाने लगता है। इस दिन को **नरक चोदस** के नाम से लोग जानते हैं।

दीपावली

अमावस्या को जगमग दीपो का त्यौहार मनाया जाता है श्रीराम इसी दिन लका विजय के बाद अयोध्या पहुचे थे। उन के वापस आने की खुशी मे अयोध्या वासियो ने दीप जलाकर स्वागत किया था। इस दिन सभी जातियॉ घरो की सफाई करके भूमि व भित्ति अलकरणो से सजाते हैं भूमि अलकरण अधिकतर रगीन होते हैं पर भित्ति अलकरण गेरू/चावल के मीठे या विभिन्न रगो से बनाये जाते है। जिनमे जातिगत विभिन्नता होती है। इस दिन गणेश-लक्ष्मी का पूजन मुख्य हैं। राम परिवार, शिव परिवार व कृष्ण परिवार की मूर्तियॉ भी दीपावली पूजन मे सजाई और पूजी जाती है। दीवाली के भित्ति चित्रो को "सौरती" या "सुराती" कहते हैं। बाजारो की रौनक देखते ही बनती हैं। पटाखे, खिलौने, मिठाई, सूखी मेवा और फलो से दुकाने भरी होती हैं। बच्चे नए-नए कपडो को पहन कर मन पसन्द खिलौने, पकवान, पटाखे, कडील, खील-बताशे व दीये खरीदते हैं। यह त्यौहार बच्चो को बहुत पसन्द हैं। यह त्यौहार परिवार के सभी लोग और सभी जातियॉ मिल-जुल कर मनाती हैं। रात्रि को यमुना किनारे दीपदान भी किया जाता है।

दीपावली का दूसरा दिन **अन्नकूट** के नाम से मनाया जाता है ब्रज प्रदेश मे गोवर्धन मे यह त्यौहार बहुत उत्साह से मनाया जाता है। कृष्ण सबधी पर्व होने के कारण बृज के सभी मदिर फिर से सज जाते हैं। भगवान को छप्पन भोग कराया जाता है। गोवर्धन पर्वत की पूजा व परिक्रमा भी की जाती है। प्रत्येक घर के आगन या

बाहर गोबर से मानव आकृति बनाई जाती है और उस के सूढी मे दूध भर कर पूजा की जाती है। किसान लोग अपने पशुधन तथा अन्य गोधन को सजाते तथा अच्छा खाने को देते हैं।

कार्तिक के शुल्क पक्ष की द्वितीया **यम द्वितीया** या **भाईदूज** के नाम से मनाई जाती है। इस दिन भाई-बहन का हाथ पकड कर यमुना मे स्नान करने का बहुत महत्व है। रात्रि के अतिम प्रहर से स्नान शुरू हो जाता है जो दोपहर तक चलता है मदिरो मे भी उत्सव मनाये जाते हैं बहन-भाई के तिलक करती है इस दिन भी भूमि चित्रण होता है जिसमे भाई-बहन के साथ एक उल्टे मु ह वाली डायन भी बनायी जाती है। जिसको मुसली से बहने कूटती है और भाई-दूज की कहानी सुनती है। बहने भाई के दीर्घायु होने की कामना करती है।

दीपावली का पर्व लगभग पॉच दिन मनाया जाता है जिसमे लगभग सभी देवी देवताओ की पूजा होती है। गणेश-लक्ष्मी, कृष्ण, राम और यम इनमे मुख्य हैं। असल मे यह कृषको का मनभावना त्यौहार है। इस समय उनकी एक फसल कट कर घर मे होती है और दूसरी खेत खलिहानो मे लहलहाती है। धन व अनाज दोनो ही होते है किसान के पास। वह उसे इस्तेमाल करने से पहले उस परमपिता को चढाना चाहता है जिसकी कृपा से उसने सब कुछ प्राप्त किया है। अतीत मे बरसात मे उत्पन्न हुए कीट पतगो का नाश कडवे तेल के दिए जलाकर पॉच दिन तक किया जाता था पहले यह त्यौहार शुद्ध लौकिक था जिस को मूर्ति पूजक हिन्दुओ ने विभिन्न देवी देवताओ का साथ जोड दिया। मूल रूप से आज भी इस त्यौहार का उद्देश्य यही है।

कार्तिक मास का एक अन्य अत्यन्त लोकप्रिय त्यौहार **देवउठान इकादशी** हैं जिस दिन शेषशायी विष्णु की जो क्षीरसागर मे शयन कर रहे होते है, पूजा अर्चना द्वारा उठाया जाता है। उस दिन तुलसी के पौधे का भी कृष्ण के साथ घर-घर और मदिरो मे ब्याह रचाया जाता है। घर देवालय विभिन्न भूमि अलकरणो से सजाये जाते हैं। घर के भीतर चौक को सुबह ही पूर कर बडी डालिया से ढक देते हैं। शाम को गन्ने से मडप बना कर चौक पर खडा कर दिया जाता है। तथा पटले पर श्रीकृष्ण तथा समीप ही तुलसी का विरवा रख दिया जाता है। पूजा की सामग्री के साथ पॉच या सात घी के दिए एक थाल मे रखकर घर का प्रत्येक पुरूष पूजा करके आरती उतारते जाते है और कहते जाते है-

उठो देव, बैठो देव, पावरिया चटकाओ देव।
क्वारो का ब्याह करो, ब्याहो का गौना करो देव
गौनन को छोरा करो, सुखी करो देव।

तत्पश्चात कही-कही तुलसी के विरवे की कृष्ण की मूर्ति के साथ विधिवत ब्याह रचाया जाता है। गन्ना सिघाडे, शकरकन्द, चावल, मिठाई फल व फूल से पूजा कर के दीपक जलाये जाते है। इस दिन बृज प्रदेश की रौनक देखते ही बनती है।

बृज प्रदेश मे तुलसी विवाह के समय कही जाने वाली रोचक कथा इस प्रकार है। तुलसी मे सावन मे दो-तीन पत्ते आ जाते है, भादो मे तुलसी लहराने लगती है और क्वार मे जबान। तुलसी के माता-पिता को अब तुलसी के ब्याह की चिन्ता सताती है वह बेटी से वर कैसा हो- इस के बारे मे पूछते हैं तब तुलसी उत्तर देती है कि-

"उगता हुआ सूर्य गर्म होता है, चन्द्र एक पखवारे का राजा होता है। शिव जटा जूट वाले, ब्रह्मा चार मुख वाले विष्णु चार भुजा वाले तथा गणेश जी सूड वाले है। शुक्र की एक ऑख है, शनीचर ग्रहो से घिरे है, मगल पीडादायक, बुध बुद्धिहीन तथा बृहस्पति शीतल है, इसलिए जग को ज्योतिर्मय करने वाले 64 कलाओ से पूर्ण श्रीकृष्ण ही मेरे पति है।" देवउठान एकादशी का यह त्यौहार गर्मी के अन्त व सर्दी के आरम्भ की मिलन बेला का त्यौहार है इस समय की जलवायु मे स्त्री व पुरूष का साथ-साथ रहने को मन करने लगता है। त्यौहारो को मनाते मनाते मन इतना उल्लसित हो जाता है कि साथ रहने की तीव्र इच्छा जान उठती है और इसीलिए यह दो बिछडे हृदयो को मिलाने, और विवाह के रूप मे स्त्री-पुरूष के मिलन का त्यौहार है इस दिन अनेको विवाह होते है तथा अन्य प्रकार के शुभ कार्य आरम्भ हो जाते हैं।

कार्तिक मास के ब्रज मे मनाये जाने वाले अन्य त्यौहार कार्तिक के शुक्ल की सप्तमी को धोबी बध, अष्टमी को गौ चारण जिसमे श्रीकृष्ण की झाकी एव गउए नगर भ्रमण करती है, नवमी को अक्षयनवमी जिसमे स्त्रियॉ आवले के पेड की पूजा करती हैं तथा मथुरा नगरी की परिक्रमा जिस को ब्रज प्रदेश के समस्त देहाती क्षेत्रो के लोग आकर करते है। दशमी को कस वध का आयोजन मथुरा मे कस टीले पर किया जाता है। श्रीकृष्ण बलराम के स्वरूपो की झॉकी बनाकर चतुर्वेदी परिवार के लोग मोटे-मोटे लट्ठो को लेकर कस के टीले पर पहुचते है तथा मार-मार कर कस का सिर धड से अलग कर देते है। तत्पश्चात कस के धड को वही लट्ठो

से खूब पीटते है। कस के सिर को गाडी मे रख कर घुमाते हुए विश्राम घाट लाकर अन्तेष्टि सस्कार कर देते हैं। इस तरह लगभग एक माह से चलते आ रहे कार्तिक माह के विभिन्न त्योहारा की समाप्ति कस वध के साथ हो जाती है।

पौषमास

इस मास मे भी बहुत मर्दी पडती है। पिछले दो माह से अत्यधिक ठड के कारण समस्त प्राणीगण त्राहि त्राहि कर उठते हैं ओर इस ठड से छुटकारा पाना चाहते है। सूर्य का रूख इस ममय भी दक्षिण मे होता है। पेड पौधे अपने पत्ते गिराने लगते है इसी समय **मकर सक्रान्ति** का त्यौहार आता है। सस्कृत भाषा मे सक्रान्ति अथवा सक्रमण का अर्थ है एक स्थान से दूसेरे स्थान को जाना। अत जब सूर्य घूमते-घुमते मकर राशि मे प्रवेश करता है तब मकर मक्रान्ति का त्यौहार मनाया जाता है। यह प्रत्येक वष 14 जनवरी को आता है काफी दिन पूर्व 13 जनवरी को आता था। इस दिन से सूय की किरणे सीधी होकर भारत भूमि पर पडने लगती है जिस से दिन बढने लगते हैं और राते छोटी होने लगती हैं। सर्दी की ऋतु का तिल-तिल करके ह्रास होने लगता है और ग्रीष्म ऋतु का आगमान होने लगता है। खेत मे खडी फमलो मे फिर से जान आ जाती है और गेहू, जौ, चना व सरसो की बालियो मे दाने पडने लगते है। सर्वत्र चहल पहल होने लगती है। इस दिन सूर्य की पूजा होती है प्रमुख नदियो, सरोवरो आदि मे स्नान होता है और लोग तिल से बने समानो, खिचडी, फल कपडे, द्रव्य आदि पडितो व गरीबो को दान मे देते है। घर मे भी बहुएँ, सास, ननद, जिठानी को सामान देती हैं और स्नान के लिए प्रमुख नदियो के किनारे जाती है। इस समय नदियो, सागरो व तालाबो के किनारे मेला लगता है।

माघ मास

माघ मास आते-आते सर्दी का प्रकोप काफी कम हो जाता है वन-उपवन मे बहार आ जाती है। पेडो मे नए-नए पत्ते आने लगते है। पलाश-सेमल के लाल-नारगी फूल वातावरण मे रग बिखेर देते है और पक्षियो का कलरव सुनाई पडने लगता है। आम मे बौर आ जाती है। कोयल की कूक सुनाई पडने लगती है। बाग-बगीचो मे तरह-तरह के फूल महकने लगते है। रग-बिरगी तितलियॉ भवरे और मधुमक्खियॉ एक फूल से दूसरे फूल पर मडराने लगती है। पक्षीगण घोसला बनाने के लिए अपने साथी का चुनाव करते हैं यह सब प्रकृति का सो कर जागन का समय है। इस तरह सर्वत्र रगीनी और मादकता बिखेरता आता है ऋतुराज बसन्त ओर उसके स्वागत मे स्त्री-पुरूष मिलकर मनाते हैं बसत पचमी का त्यौहार। बसत पचमी का दूसरा नाम श्रीपचमी भी है। इस दिन ब्रज मे पीले रग की बहार आ जाती है। ब्रज प्रदेश के प्रत्येक मदिर के ठाकुर पीले वस्त्रो तथा फूलो से सजा दिए जाते है। मेलो और रास लीला का आयोजन होता है। राम लीला मे कृष्ण और राधा को फूलो से ढक दिया जाता है। लोग आज पीले वस्त्र पहनते हैं। घरो मे या तो कामदेव की पूजा करत हैं या फिर सरस्वती देवी की। पीला मीठा या नमकीन चावल, हलवा केशर का, आम के बौर मरसो व गेदा के पीले फूल धूप-दीप नैवेदय से विधिवत् पूजा की जाती है और प्रसाद बॉटा जाता है। बहुत से लोग आज के दिन से बच्चो का विद्या अभ्यास शुरू करवाते हैं। मथुरा मे दुर्वासा ऋषि के मादिर पर बहुत बडा मेला लगता है। आज के दिन से होली की तैयारी शुरू हो जाता है फाग, होली रसिया, स्वाग आदि गाये जाने लगते है तथा भगवान को गुलाल भी लगाया जाता है।

बसन्त पचमी के अतिरिक्त ब्रजप्रदेश मे **शीतला अष्टमी** जिसमे शीतला देवी की पूजा बासी भोजन से की जाती है मनाया जाता है। मौनी अमावस्या तथा माघ पूर्णिमा को उपवास रखा जाता है तथा स्नान का महत्व है।

फाल्गुन मास

माघ के बाद आता है फाल्गुन मास जिस का मुख्य त्यौहार शिवरात्रि और होली है। फाल्गुन कृष्ण चर्तुदशी को महाशिवरात्रि का व्रत रखा जाता है। ब्रज प्रदेश मे भी लोग दिन भर उपवास करते हैं तथा फलाहार करते हैं। शिवलिग पर दूध चढाते हैं और फल, फूल, धतूरा और बेलपत्र से पूजा करते हैं। कही-कही भाग भी चढाई जाती है। नदियो मे स्नान भी किया जाता है।

फाल्गुन मास की पूर्णिमा को होली का त्यौहार ब्रज मे बहुत ही सुन्दरता से मनाया जाता है। प्रत्येक शहर, गॉव, कस्बे मे चौराहे पर होली जलाने के लिए लकडी व अन्य जलने वाली वस्तुएँ एकत्र की जाती है तथा होली के दिन उस के चारो ओर सुन्दर सा चौक बना दिया जाता है। मुहुर्त के अनुसार घर के मर्द बाहर जाकर

मोहल्ले की होलिका दहन मे भाग लेते है। परिक्रमा करते हुए गेहू–जौ की बालियॉं, चना और गन्ना भूनते है। बनाया कुछ पकवान होली पर चढाया जाता है तथा लोग गले मिल कर एक दूसरे को गुलाल मलते है। रात भर फाग, रसिया, धमार आदि के गीतो से वातारवरण गूँजता रहता है।

घर के भीतर भी होली का आयोजन होता है। कायस्थ, ब्राह्मण तथा क्षत्रियो की उपजातियो के यहॉं होली के अवसर पर सुन्दर सा रगीन भूमि अलकरण होता है यह चित्रण "दुनियो " के नाम से अधिक लोकप्रिय है। होली के 20 दिन पहले से सध्या समय ऑगन को गोबर से लीप लिया जाता है जिस पर गेहू के आटे से चित्रण किया जाता है। जिसको सुबह उठा लिया जाता है इसमे रगभरनी एकादशी से रग भरने शुरू कर दिए जाते है गुलाल के रगो से भरा हुआ यह चौक बहुत सुन्दर और लुभावना चन्द्रमा की रोशनी मे लगता है। होली के दिन का चौक खूब बडा होता है जिस मे सूर्य–चन्द्र व तारे आदि भी दिखाए जाते हैं। इस चौक के ऊपर ही गोबर से बनाई और सुखाई गई वरमुलिया या गुलरियॉं की पॉच या सात माला बना कर रख दी जाती है बीच मे गोबर से ही बनाई गई प्रतीकात्मक होलिका की आकृति। कही कही मिट्टी की होलिका की मूर्ति भी इसी बीच मे रखी जाती है जो इस प्रदेश की विशेषता है। बाहर से घर के पुरूष आग लाकर घर की होली जलाते है और पूजा करके एक दूसरे को मिठाई खिलाते हैं गुलाल मलते है और होलिका की परिक्रमा करते हैं। जौ, गेहू, चने की बालिया भूनते है।

होली के समय बनाये जाने वाले पकवानो मे गुझिया, तिकोना, तरह–तरह के मीठे नमकीन, नमक पारे व सकरपारे, सेब, दही बडे काजी के बडे व पकौडे, काजी का ही आलू, सेम, गाजर व पपीते का अचार और बेसन की पपडिया प्रमुख हैं। होली का त्यौहार खाने–पीने हसी–मजाक, नाचने–गाने का त्यौहा है जिसे प्रत्येक जाति का बच्चा, बूढा जवान मिल–जुलक मनाता है लोग घर–घर जाकर होली खेलते है। घर–घर होली वे गीत गाये जाते हैं। कृष्ण राधा की भूमि होने के कारण बरसाने बृ दावन और गोकुल की होली देखन योग्य होती है।

रगभरनी एकादशी से ही समस्त मदिरो मे फाग–उत्सव प्रारम्भ हो जाते हैं, नगर सवारी निकलती है। ये उत्सव दौज तव चलते रहते है। दौज को दाउजी मे हुरगा होता है। दशमी व एकादशी को क्रमश नन्दगाव और बरसाने मे लठामार होली होत है जिस को देखने देशी और विदेशी पर्यटक भी जाते है और कुछ दर्शक तो उसी मे रग खेलने के लिए शामिल हो जाते हैं। सक्षेप मे कहा जा सकता है कि होली का त्यौहार–अबीर–गुलाल क त्यौहार है केसर और रगो का पर्व है। देवर–भाभी व जीजा–साल के हास्य–व्यग का उत्सव है।

वैदिक काल मे इसी दिन से नये वर्ष का शुभारभ माना जात था तथा कर्मकाडी लोग इसी दिन प्राथम चातुर्मास्य से सबधित **वैश्वदेवयज्ञ** का श्रीगणेश करते थे। **वात्स्यायन** रचित **कामसूत्र** मे पिचकारी द्वारा पुष्पो से तैयार रगो को एक दूसरे प छोडने का रिवाज था। **कालिदास रचित** नाटको म होलिकात्सव को बसतोत्सव व ऋत्युत्सव के नाम से सुन्दरता स वर्णित किया गया है। इसी तरह की हर्षदेव रचित **रत्नावली नाटिका** मे इस उत्सव का सजीव वर्णन किया गया है। सदियो से यह उत्सव राग रग के त्यौहार के रूप मे ही मनाया जा रहा ह तथा इस से सबधित अनेको गीत, नाटक, लीलाओ का सजृन हुआ है। यह एक ऐसा उत्सव है जिस मे मुसलमान बादशाह और अग्रेज भी शामिल हुए।

लोककथाएँ

नागपंचमी

प्राचीन काल मे एक किसान अपने परिवार के साथ मणिपुर मे रहता था। उसके दो लडके और एक कन्या थी। एक दिन की बात है जब वह खेत जोत रहा था उस समय हल की फाल मे बिधकर सॉप के तीन बच्चे मर गये। उस समय सर्पो की माता नही थी। दूसरे दिन जब उसे ज्ञात हुआ कि मेरे बच्चे हल के फाल से मार डाले गये तब उसने अपने बच्चे के मारने वाले से बदला लेने का सकल्प किया। रात के समय नागिन उस किसान के घर गई जिसने उसके बच्चे को मार डाला था। वहाँ जाकर उसने क्रमश किसान, उसकी स्त्री तथा दोनो बच्चो को डस लिया और इस प्रकार चारो की मृत्यु तत्क्षण हो गई। दूसरे दिन नागिन किसान की लडकी को डसने के लिए गई। उस लडकी को मालूम हो गया था कि नागिन ने मेरी मॉ, बाप तथा भाई को मार डाला है। अत उसने नागिन से बचने के लिए नागिन के सामने कटोरा भर दूध और धान का लावा रख दिया। उसके बाद उसने क्षमा मॉगी। वह नागिन उसके ऊपर बहुत प्रसन्न हुई और वर मॉगने को कहा। लडकी ने यह वर मागा कि मेरे माता-पिता और दोनो भाई पुन जीवित हो जाए और जो आज के दिन नागो की पू जा करे उसे कभी भी नाग के डसने का डर न हो। नागिन लडकी को यह वरदान देकर चली गई। कहा जाता है कि उसी दिन से नागपचमी के पूजन का प्रसार हुआ।

हलषष्ठी

सुभद्रा नाम का एक राजा था रानी का नाम सुवर्णा था। रानी के हस्ती नाम का प्रसिद्ध पुत्र उत्पन्न हुआ। इसने अपने नाम पर प्राचीन काल मे हस्तिनापुरी बसाई। यह बालक धाय के साथ गगाजी के तीर पर एक दिन गया। चचल तो था ही गहरे पानी मे चला गया। जिससे मगर ने उसे पकड लिया। रानी सुवर्णा इस समाचार से इतनी दु खी हुई कि उसने धाय के पुत्र को जलती हुई आग मे फेक दिया और अपना प्राण देने पर उद्यत हो गई। उधर बेचारी वह धाय दु ख से व्याकुल होकर घने जगल मे चली गई और कुश तथा पलाश से पूर्ण जगल मे मध्यान्ह के समय मे परिवार के साथ शकर की पूजा नित्य प्रति करने लगी। जगल में रहती तथा धान और महुआ का भोजन करती। हलषष्ठी को हस्तिनापुर मे एक विचित्र घटना घटी। राजा रानी के अचरज का ठिकाना नही रहा, जब उन्होने इन्ही आखो से धाय के पुत्र को भीड़ मे से जीता जागता निकलते देखा। इस विचित्र घटना का कारण ब्रह्मज्ञानी ब्राहमण ने बतलाया कि हलषष्ठी के दिन सपरिवार भगवान शकर के पूजन का यह फल है। राजा रानी स्वय जगल मे गये और अपनी दासी से इस चमत्कार का कारण पूँछा। उसने कहा-हलषष्ठी के दिन कुश पलाश के नीचे भगवान शकर स्वय प्रार्दुभूत हुए थे और स्वय मुझे वरदा दिया। रानी भी यह व्रत करे और उसका पुत्र भी जीवित जो जायेगा तदनुसार रानी ने भी यह व्रत किया तथा जिसके कारण उसव मृतक पुत्र जी उठा, व अन्य पुत्रो के भी जन्म से भी वह कृतकृ हो उठी।

हल-षष्ठी- एक गर्भवती ग्वालिन दही बेचने के लि बाहर चली। रास्ते मे ही उसे बालक उत्पन्न हुआ। उसने उस बाल को झरबेरी की झाडी मे कपडे लपेट कर रख दिया और स्व दही बेचने के लिए आगे बढी। उसका दूध दही गाय तथा का मिला था परन्तु उसने भैंस का ही बतलाकर बेच डाला। झूठ बोलने का फल यह हुआ कि जब वह लौट कर आई उसने बच्चे को मरा हुआ पाया। बात यह थी कि उस अनुपस्थिति मे अनजाने मे हल की नोक उस बच्चे के शरीर घुस गई थी। हलवाहे ने उस मरे हुए बच्चे को झरबेरी के व से सीकर वही रख दिया था। ग्वालिन ने जब यह दृश्य देखा उसे अपने झूठ बोलने का फल समझकर वह सीधे गॉव लौट और लोगो से कहने लगी कि मेरा दूध गाय और भैंस का हुआ है। केवल भैंस का नही है। सच्ची बात कहने का फल हुआ कि उसका बच्चा जी उठा और वह सहर्ष घर लौट गई

कृष्णाजन्माष्टमी

द्वापरयुग मे भोजवशी उग्रसेन नामक राजा यहॉ राज्य करता था। इसके लडके का नाम कस था जो बहुत ही दुष्ट, दुराचारी तथा प्रजापीडक राजा था। इसने अपने पिता को गद्दी से उतार दिया और स्वय राजा बन बैठा। कस की एक बहन थी जिसका नाम देवकी था। उसका विवाह वसुदेव नामक यादव वशी सरदार के साथ हुआ था जो उग्रसेन के प्रधान आदमियो मे से था।

एक समय जब कस अपनी बहन को उसकी ससुराल लिये जा रहा था तब रास्ते मे यह आकाशवाणी हुई हे कस! जिस देवकी को तू बडे प्रेम से लिये जा रहा है उसी मे तेरा काल बसता है। उसी के गर्भ से उत्पन्न आठवॉ बालक तुझको मारेगा। इस पर कस ने अपने मन मे यह सोचा कि हम देवकी ही को मार डाले तो सारा झझट दूर हो जाय। अत उसने उसे मारने के लिये तलवार निकाली। परन्तु देवकी ने उससे प्रार्थना करते हुए कहा–मुझे जो लडका पैदा होगा उसे मैं तुमको दे दू गी। अत मुझे मारने से तुम्हे क्या फायदा होगा? कस ने बहन की प्रार्थना स्वीकार कर ली और वसुदेव को मारने का विचार छोड दिया। परन्तु वे कही भाग न जाए, इसलिए वसुदेव और देवकी को कठिन कारागार मे डाल दिया।

कुछ काल के अनन्तर देवकी के गर्भ से एक पुत्र पैदा हुआ और वह कस के सामने रखा गया। कस ने यह सोचकर कि आठवे बालक से मुझे मृत्यु का भय है। अत उस बालक को छोड दिया परन्तु नारद जी के कुटिल उपदेश के कारण उसे मरवा डाला। उसके बाद देवकी के गर्भ से जितने बालक हुए उन सबको कस ने मरवा डाला। जब उसको देवकी के आठवे गर्भ की बात मालूम हुई तब उसने कारागार मे कडा पहरा बैठा दिया जिससे कोई निकल न सके।

भादो मास की कृष्णपक्ष की अष्टमी थी। रोहिणी नक्षत्र। रात्रि के बारह बज रहे थे। चारो तरफ नि स्तब्धता का राज्य था। घनघोर अधकार छाया हुआ था और प्रचण्ड मूसलाधार वर्षा हो रही थी। ऐसे समय मे भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। भगवान की दया से सब पहरे वाले उस समय सो रहे थे और जेल के फाटक आप–से–आप खुल गए थे। उस समय यह आकाशवाणी हुई कि ऐ वसुदेव गोकुल मे नन्द के एक कन्या पैदा हुई है। इस बालक को वही पहुचा आवो और उस कन्या को लाओ। वसुदेव नवजात बालक श्रीकृष्ण को सूप मे उठाकर उसी अधेरी रात मे गोकुल ले चले। मार्ग मे यमुना नदी को बडी कठिनाई से पार किया। वहॉ जाकर कृष्ण को नन्द के घर रख कर लडकी को उठा लाए। दूसरे दिन प्रात काल जब कस को पुत्री होने का समाचार मिला तो उसने उसे मगवाया और उसे पकड कर ज्यो ही पत्थर पर पटकना चाहा त्योही वह लडकी हाथ से छूट कर आकाश मे उड गई और बोली ऐ मूर्ख! मुझे मारने से क्या होगा। तुमको मारने वाला तो गोकुल मे पैदा हो गया है। कस कृष्ण को गोकुल मे सुरक्षित जानकर बडा व्याकुल हुआ और उसको मार डालने के लिए तरह–तरह के रक्षसो को भेजना प्रारम्भ कर दिया। पूतना, अघासुर, बकासुर आदि कई राक्षसी और राक्षस मायावी रूप बनाकर कृष्ण को मारने के लिए भेजे गए। परन्तु कृष्ण ने उन सब को मार कर रसातल को पहुचा दिया। श्रीकृष्ण जी गोकुल मे रह कर गौवो को चराते थे और गोपियो के साथ रासलीला किया करते थे। बडे होने पर भगवान श्रीकृष्ण स्वय मथुरा गए। वहॉ उन्होने कस को मार कर यमलोक को पहुचा दिया और अपने माता–पिता को कारागार के कष्ट से मुक्त किया। इस प्रकार उन्होने शूरसेन देश की प्रजा को दुष्ट कस के अत्याचार से बचाया।

ऋषि पचमी

सतयुग मे प्रसेनजित नामक राजा राज्य करता था। उसके राज्य मे वेद का प्रकाण्ड पण्डित सुमित्र नामक एक ब्राह्मण खेती करके अपनी जीविका चलाता था। उसकी स्त्री का नाम जयश्री था। वह बडी सती, साध्वी थी और अपने पति को खेती के काम मे सदा सहायता देती थी। एक समय वह स्त्री रजस्वला होकर अज्ञात अवस्था मे अपने गृह का कार्य करती रही और ब्राह्मण को भी स्पर्श किया। दैव योग से पति पत्नी एक ही साथ मरे। रजस्वला अवस्था मे स्पर्शास्पर्श का विचार न रखने के कारण दूसरे जन्म मे स्त्री ने कुतिये का जन्म धारण किया और पति ने अपवित्र अवस्था मे स्त्री समागम के करने के कारण दूसरे जन्म मे बैल कि योनि को प्राप्त किया।

ब्राह्मण के पुत्र का नाम सुमति था जो अपने पिता ही के समान वेदो का ज्ञाता था। सयोग से उसके माता–पिता दूसरे जन्म मे कुतिये और बैल का जन्म धारण कर उसी के घर मे रहते थे। एक दिन सुयोग्य पुत्र ने अपने माता और पिता का श्राद्ध किया। सुमति की स्त्री ने ब्राह्मणो को भोजन कराने के लिए जो खीर तैयार

की थी उसमे अकस्मात् एक सर्प ने विष उगल दिया। कुत्ती ने यह दृश्य देखा था। उसने सोचा कि यदि ब्राह्मण यह खीर खाऐंगे। तो खाते ही मर जाऐंगे। अत उसने सुमति के सामने ही उस खीर को जाकर छू दिया। यह देख कर सुमति की स्त्री बडी क्रुद्ध हुई और उसने जलती हुइ लकडी से इस कुत्ती को मारा। बाद मे उसने सारी खीर को गिरा कर जमीन मे गाड दी और कुत्ती को उस दिन कुछ भी खाने को नही दिया अत कुत्ती भूखी ही रही।

रात्रि मे उसी घर मे बधे हुए बैल से कुत्ती ने दिन वाली घटना को कह सुनाया तथा अपने ऊपर पडी हुई प्रचण्ड मार की भी बात बताई। फिर बाद मे वह बोली–क्या करू? अत्यधिक भूख के मारे मेरी कमर टूटी जाती है। बैल ने कहा–आज पचमी तिथि होते हुए भी मुझे भी दिन भर एकादशी ही करनी पडी है। मुझको दिन भर आज सुमति ने हल मे जोता था और मेरे मुह मे जाब बॉध दिया था जिससे मै कोई वस्तु खा न सकूँ और तृण भी न चर सकू। आज हम दोनो के भूखे रहने से सुमति का श्राद्ध करना व्यर्थ ही हुआ।

सुमति पशुओ की बातो को अच्छी तरह से समझता था। उसने कुत्ती और बैल के वार्तालाप को सुना और उसे समझ कर बडे आश्चर्य मे पड गया। दौडा हुआ एक ऋषि के आश्रम मे गया और अपने पिता के पशु योनि मे पैदा होने का कारण पूँछा। ऋषि ने ध्यान किया और अपने योग–बल से उन दोनो की पूर्वजन्म की कथा को जान लिया तथा सारा वृतान्त सुमति के कह सुनाया।

सुमति ने दु खी होकर ऋषि से पूछा कि महात्मन्! ऐसा कोई उपाय बतलाए जिससे मेरी माता और पिता इस योनि से मुक्ति पा जाऍं। तब ऋषि ने उत्तर दिया कि तुम दोनो स्त्री और पुरुष ऋषि पचमी का व्रत करो और विधिपूर्वक उद्यापन करके उस दिन बैल के जोतने से उत्पन्न कोई भी अन्न न खाओ तभी तुम्हारे मात–पिता की मुक्ति हो सकती है। पितृ–भक्त सुमति ने ऋषि के कथनानुसार ही व्रत किया। अनन्तर इस व्रत के कारण उसकेमाता और पिता ने पशु योनि से मुक्ति को प्राप्त किया।

नवरात्रि–दुर्गा अष्टमी

एक समय महिषासुर नाम का असुर ऐसा प्रबल हो गया कि उसने स्वर्ग लोक के सब देवताओ को परास्त करके इन्द्र लोक को भी जा घेरा। इन्द्र उसके डर से भाग कर ब्रह्मा, विष्णु और महेश के पास गए। इन्द्र सहित त्रिदेवो ने आदिशक्ति भगवती का ध्यान किया उसी क्षण सब देवताओ के अगो मे से एक तेजपुज ज्वाला के समान निकला और समस्त पृथ्वी पर छा गया। उस तेज से सतप्त होकर देवताओ ने शक्ति की स्तुति करते हुए यह प्रार्थना की कि हम लोग आप का यह तेज सहन नही कर सकते। इस कारण कृपा कर आप मूर्तिमान रुप धारण कीजिए। यह सुनते ही सुन्दर मूर्ति प्रकट हो गई जिसके तीन नेत्र और आठ भुजाये थी। तब सब देवताओ ने उस मूर्ति की पूजा की। विष्णु ने अपना सुदर्शन चक्र, शिव ने त्रिशुल, इन्द्र ने वज्र, वरुण ने शक्ति, यमराज ने तलवार और अग्निबाण दिया। लक्ष्मी ने अपना सब श्रृगार उसको दिया और सवारी के लिए हिमालय ने सिह भेजा। इस प्रकार से सुसज्जित होकर इधर से भगवती चली और उधर से महिषासुर आगे आया। शक्ति के साथ मे जो देवताओ का दल था। उसको छोडकर भगवती आगे बढ गई और उन्होने महिषासुर के आगे वाले दैत्यदल पर भीषण आक्रमण किया और देखते ही देखते समस्त राक्षसो के समूह का नाश कर डाला। अब महिषासुर ही केवल बच गया था। वह अनेक आसुरी माया करते हुए युद्ध मे प्रवृत्त हुआ। परन्तु भगवती ने सम्पूर्ण मायाजाल को छिन्न–भिन्न करके महिषासुर को कालपाश मे लपेट कर पृथ्वी पर पटक दिया और उसकी गर्दन पर पैर रख कर चमकती तलवार से उसके सिर को काट डाला। इस प्रकार से देवताओ को कष्ट देने वाले तथा स्वर्गलोक मे कुहराम मचाने वाले महिषासुर का वध करके भगवती ने देवताओ को अभयदान दिया। तभी से वे "महिषासुर मर्दिनी" के नाम से प्रसिद्ध हो गयी।

होलिका दहन

अत्यन्त प्राचीन काल मे कश्यम नामक राजा थे। उनके वीर्य से अदिति नामक स्त्री से दो पुत्र उत्पन्न हुए– 1 हिरण्याक्ष और 2 हिरण्यकशिपु। ये दोनो भाई बडे ही पराक्रमी थे। इसीलिए सभवत दूसरे जन्म मे ये रावण और कुम्भकर्ण तथा तीसरे जन्म मे शिशुपाल और दन्तब्रक के नाम से प्रसिद्ध हुए। इसी वीर तथा पराक्रमी परन्तु अत्याचारी हिरण्याक्ष को बराह–अवतार धारण कर भगवान विष्णु ने मारा था। भाई का बध करने वाले विष्णु से बदला लेने की इच्छा से हिरण्यकश्यप ने ब्रह्मा और महादेव की बडी पूजा की। उसकी पूजा से सतुष्ट होकर ब्रह्मा ने कहा कि वर मॉंगो। हिरण्यकश्यप ने कहा– "मै रात्रि अथवा दिन मे न मरूँ सूखी

अथवा गीली चीज से न मरूँऔर पशु अथवा मनुष्य से भी न मरूँ" ब्रह्मा के "एवमस्तु" कहने पर वह अपने आप को अजय मान देवता, गौ और ब्राह्मणो को दुाख देने लगा। इसका विवाह जभासुर की कन्या"कयाधु" के साथ हुआ था जिससे अनुह्लाद, सह्लाद तथा प्रह्लाद आदि छ पुत्र उत्पन्न हुए। विपरीत वातावरण मे उत्पन्न होने पर भी प्रह्लाद जन्म से ही भगवान का भक्त तथा सदा एकान्त मे समय बिताता भगवान का नाम लेता था। जब हिरण्यकश्यप को यह मालूम हुआ तो वह बडा क्रोधित हुआ और उसने प्रह्लाद को एक अच्छे गुरू के पास पाठशाला मे पढने के लिए भेज दिया। प्रह्लाद वहॉ भी बालको को भगवान् की भक्ति करने का उपदेश करता था तथा अपने गुरू जी को भी ऐसा ही करने को समझाता था। पढने मे उसका तनिक भी मन नही लगता था। गुरू ने इसकी शिकायत उसके पिता के पास की। पिता ने प्रह्लाद को बहुत धमकाया तथा दण्ड दिया। उसने एक बार प्रहलाद को पहाड पर से गिरा दिया, दूसरी बार विष पिलाया, परन्तु भगवान् की दया से प्रह्लाद को कुछ भी हानि नही हुई और वे भगवत् भक्ति मे तल्लीन रहे। अन्त मे उसने प्रह्लाद को होलिका की गोद मे बैठाकर उसके शरीर मे आग लगा दी, परन्तु वह फिर भी जीतित निकल आया। अब अन्ततोगत्वा हिरण्यकश्यप ने क्रोध मे आकर प्रह्लाद को तलवार से मार डालने की ठानी और उसने पूँछा कि अब बताओ, तुम्हारा भगवान कहॉ है? प्रह्लाद ने कहा कि वह सर्वव्यापी है। "क्या वह इस खम्भे मे भी है?" प्रह्लाद ने कहा-हॉ। इस पर हिरण्यकश्यप ने जोरो से खम्भे पर तलवार चलायी जिससे खम्भे के दो टुकडे हो गए। इतने मे भक्तो के रक्षक नृसिह भगवान् खम्भे के बीच से निकले और उस पापी हिरण्यकश्यप का अपने प्रचड नखो से चीरकर अन्त कर दिया। जैसा पहले लिखा गया है हिरण्यकश्यप को यह वर मिला था कि न तो वह आदमी से मरेगा और न पशु से और न किसी शस्त्र से। इसलिए भगवान् ने नृसिह (मनुष्य तथा पशु दोनो) का रूप धारण किया तथा अपने नखो से उसे गोदो मे डालकर फाड डाला।

गंगा दशहरा

अयोध्या के महाराज सगर की दो रानियॉ थी। एक का नाम था केशिनी और दूसरी का सुमति। केशिनी के असमजस नामक एक पुत्र था जिसके लडके का नाम अशुमान था। सुमति के साठ हजार लडके थे। ये साठ हजार भाई राजा सगर के अश्वमेघीय अश्व के ढूढने गए थे। इन्द्र ने अश्वमेघ के उस घौडे को चुराकर कपिल मुनि के आश्रम मे बॉध दिया था, परन्तु ध्यानावस्थित ऋषि को इस बात की बिल्कुल खबर नही थी। सगर के पुत्र जब ऋषि के आश्रम मे पहुचे तो उनसे घोडे का समाचार पूँछा। ध्यानावस्थित महर्षि के कुछ उत्तर न देने पर वे आश्रम मे घोडे को खोजने लगे। जब ढूढने पर उन्होने यह देखा कि यज्ञीय घोडा इसी आश्रम मे बधा है, तब वे महर्षि पर बहुत क्रोधित हुए और उन्हे अनुचित शब्द भी कहे। तपस्या मे बाधा उत्पन्न होने पर मुनि ने अपनी ऑखे खोली और मुनि के तेज से वे साठो हजार भाई जल कर भस्म हो गए। जब अशुमान को इसका समाचार मिला तब वे दु खी होकर कपिल मुनि के आश्रम पर गए तब गरुड जी ने कहा कि अशुमान ! तुम्हारे ये साठ हजार सम्बन्धी अपने पापाचरण के कारण कपिल देव के क्रोध से भस्म हो गए है। यदि तुम इनकी मुक्ति चाहते हो तो स्वर्ग से गगा को यहॉ लाओ।

महाराज सगर के देहावसान होने पर मत्रियो ने अशुमान को राजा बनाया। कछ दिनो तक राज्य करने के बाद अपने पुत्र दिलीप को राज्य देकर अशुमान् दारुण तपस्या करने के लिए पर्वत पर चले गए और तपस्या करते ही वे पचत्व को प्राप्त हो गए, परन्तु गगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर नही ला सके। दिलीप ने भी गगा को, लाने का प्रयत्न किया परन्तु उन्हे भी सफलता नही मिल सकी ।

दिलीप का पुत्र भगीरथ बडा ही प्रतापी तथा धर्मात्मा राजा था। उसने अपने पितरो को तारने के लिए गगा को पृथ्वी पर लाने की प्रतिज्ञा की और राज्य छोड कर तपस्या के लिए निकल पडा तथा गोकर्ण-तीर्थ पर तपस्या करने लगा। इन्द्रियो को जीत कर पचाग्नि के ताप से तपना, उर्ध्वबाहु रहना और मास मे एक बार आहार करना यही उसका नियम था। इस प्रकार घोर तपस्या करते हुए बहुत वर्ष बीतने पर वह सूख कर कॉटा हो गया, तब उसकी भीषण तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा उसके पास गए और कहा-राजन! तुमने घोर तप किया है, अत प्रसन्न हाकर वर मॉगो। भगीरथ ने कहा-भगवान् मेरे पूर्वजो के उद्धार के लिए गगा जी को दीजिए। बिना गगा के उनकी मुक्ति नही हो सकती। ब्रह्मा ने कहा-"एवमस्तु" परन्तु गगा को बेगवती धारा को धारण करने की शक्ति शिव के अतिरिक्त अन्य किसी मे नही है, अत उनको जाकर प्रसन्न करो।

राजा भगीरथ ने शिव की आराधना एक अगूठे पर खडे होकर की। अत तपस्या से प्रसन्न होकर शिव ने यह वरदान दिया

कि मैं अवश्य ही गगा को अपने शीश पर धारण करूगा। इस प्रकार गगा जी ब्रह्मा की दया से स्वर्गलोक से भूतल पर आइ, परन्तु यहाँ आते ही भगवान शिव की जटाओ मे विलीन हो गइ। गगा के अभिमान को तोडने के लिए शिव ने अपने जटाजूट का ऐसा फैलाया कि वर्षो तक खोजने पर गगा को बाहर निकलन का मार्ग न मिला। तब भगीरथ ने फिर शिव की अस्तुति की। शिव ने प्रसन्न होकर गगा को हिमालय मे ब्रह्मा के द्वारा बनाए गए बिन्दुसार नामक तालाब मे छोड दिया। तब गगा की धारा इस पृथ्वी पर बहने लगी। राजा भगीरथ दिव्य रथ पर चढे हुए आगे-चलते थे और गगा की धारा पीछे-पीछे। इस प्रकार गगा के भूतल पर आने की अपूर्व शोभा यात्रा आरभ हुई। गगा मार्ग के अनेक स्थानो को पवित्र करती हुई उस स्थान पर पहुची जहाँ सगर के साठ हजार लडके मरे पडे थे तथ उसके भस्म का ढेर लगा हुआ था। गगा के जल का स्पर्श करते ही वे सब मुक्ति को प्राप्त हो गए। उस समय ब्रह्मा ने प्रकट होकर भागीरथ से कहा-राजन। तुमने अपूर्व तप किया है। अत तुम्हारा नाम अमर हो गया है। गगा का नाम आज से भागीरथी होगा जो सदा तुम्हारे नाम को स्मरण करता रहेगा। ब्रह्मा का यह वरदान सचमुच सत्य निकला। आज भी गगा भागीरथी के नाम से प्रसिद्ध है और परम तपस्वी राजा भगीरथ के नाम को अजर तथा अमर बनाये है।

अहोई अष्टमी

किसी स्त्री के सात लडके थे। कार्तिक के महीने मे दीपावली के पूर्व सभी स्त्रिया अपने घर को लीपने के लिए बाहर से मिट्टी लाती थी। उक्त स्त्री भी गाव के बाहर से लीपने के लिए मिट्टी लाने को गई। दैवात् उसी स्थान पर साही की माँद थी। कुदाली साही के बच्चे को लग गई जिससे वह तुरन्त मर गया। इस मृतक बच्चे को देख कर उसे बडी दया आई, लेकिन वह कुछ नही कर सकती थी। मिट्टी लेकर घर चली आई।

उसका बडा लडका मर गया। थोडे ही दिन के बाद उसका दूसरा लडका भी मर गया। इस प्रकार से साल भर के भीतर ही उसके ही उसके सातो लडके मर गए। उसने कोई गलती न की थी। केवल उसके द्वारा साही के बच्चे मर गए थे। गाँव की स्त्रियो ने उसकी बात सुनी और काहा कि तुम्हारा आधा पाप अपनी गलती मानने से समाप्त हो गया और आधा पाप कटने के लिए अष्ठमी का ब्रत करो। उस दिन साही तथा उसके बच्चे उसका चित्र बनाकर पूजा करो। ईश्वर चाहेगा तो तुम्हारे बच्चे पुना जीवित हो जायेगे।

दुबारा जब कार्तिक कृष्ण अष्ठमी आई। उस दिन व्रत करके उस स्त्री ने साही और उसके बच्चे का चित्र बनाया। और पूजन किया भगवान की कृपा से उसके सातो बच्चे जीवित हो गए। तभी मे इस व्रत की उत्पत्ति हुई।

शिवरात्रि

प्रत्यन्त देश मे एक बहेलिया रहता था जो प्रतिदिन जीवो की हिंसा कर अपने परिवार का पालन करता था।एक समय पर रुपया न दे सकने के कारण एक साहूकार ने उसको एक शिव मदिर मे कैद कर दिया। उस दिन फाल्गुन मास की कृष्णपक्ष की त्रयोदशी थी। बहेलिया ने उस दिन आगामी शिवरात्रि सबधी कथा सुनी। शाम को साहूकार ने उस व्याधि को इस शर्त पर छोड दिया कि तुम समय रहते मेरा रुपया जरुर चुका देना। दुसरे दिन प्रात काल होते ही बहेलिया जगल ओर शिकार करने के लिए चल पडा। परन्तु दिन भर उसको कोई शिकार नही मिला। उस दिन दु ख के मारे कुछ भोजन भी नही किया। वह थका-मादा इधर-उधर घूम रहा कि इतने मे उसने एक तालाब देखा जिसके किनारे पर एक बेल का वृक्ष था। उस बेल वृक्ष के नीचे एक शिवलिग स्थापित था। बहेलिया उस पेड पर चढ गया और अपने बैठने के लिए स्थान बनाने के लिए बेल पत्तो को नीचे गिराने लगा। इस प्रकार बेल के पत्तो से शिवलिग ढँक गया। ब्याध दिनभर भूखा रहने के कारण एक प्रकार से शिवरात्रि का व्रत कर चुका था और पत्तो के गिराने से शिवजी के ऊपर बेलपत्र भी चढ गए। इस प्रकार व्रत के कारण उसकी अन्तरात्मा अत्यन्त पवित्र हो गयी थी।

ब्याध को पेड पर बैठे-बैठे एक पहर बीत चुका था। उसने देख कि एक हिरनी जो गर्भवती होने के कारण बडी धीमी चाल चल रही है इधर ही आ रही है। उसने बाण उठाकर उसे मारना चाहा। इस पर हिरनी ने उत्तर दिया कि ए ब्याध। यह क्या अनर्थ कर रहे हो? ब्याधा ने कहा कि यह तो मेरा नित्य का ही कर्म है। इस पर हिरनी बोली-मैं गर्भवती हू। मेरे प्रसूति का समय भी अब करीब आ गया है। अत मैं बच्चा पैदा करके उसे उसके पिता को सौप कर तुम्हारे पास अवश्य लौट आऊगी। इस समय कृपा करके तुम मुझे छोड दो। ब्याधा का मन व्रत के कारण अत्यन्त पवित्र तथा

निर्मल हो गया था। उसे दया आ गयी और उसने उस गर्भवती हिरनी को छोड दिया। आधी रात हो जाने पर एक दूसरी हिरनी आयी जो अत्यन्त सुन्दरी थी। व्याधा ने फिर उसे मारने के लिए धनुष–बाण उठा लिया। हिरनी ने गिडगिडाते हुए कहा– "आप मुझे क्यो मारते है।" मैं निवृत्ति वाली हू। यदि पति का सयोग होने के पूर्व मै मार डाली गयी तो मेरी यह अभिलाषा सदा बनी रहेगी और यह बात आपके लिए कुछ अच्छी न होगी मैं अपनी अभिलाषा की निवृत्ति करके आपके पास अवश्य लौटू गी तब आप मुझे मारिएगा। व्याधा के निर्दय चित्त मे हिरनी की करूणाजनक बात सुनकर दया आ गयी और उसने उसे भी छोड दिया।

दूसरी हिरनी के चले जाने पर ब्याधा शिव शिव करता हुआ उसी पेड पर बैठा रहा। कभी–कभी वह पत्ते तोड कर गिराता था जो अनायास शिवलिग पर चढते जाते थे। इतने मे तीसरा पहर भी आ गया ब्याधा ने देखा कि एक हिरनी तीन चार बच्चो के साथ स्वच्छन्द बिहार करती हुई चली आ रही है। उसने इसे मारना चाहा। परन्तु हिरनी ने कहा ब्याधा! जब तुमने हमसे पहले के दो जीवो को नही मारा तो हमे मार कर क्यो पाप के भागी बन रहे हो। मैंने तुम्हारा क्या बिगाडा है। मेरे मरने से ये बच्चे भी अनाथ हो जाएगे। यदि आप दया कर मुझे छोड दे तो मै इन बच्चो को इनके माता पिता के पास पहुचा कर शीघ्र ही कल लौट आऊगी। शिव के व्रत के कारण व्याधा का हृदय अत्यन्त दयालु हो गया था। अत उसने इस हिरनी को भी बिना मारे छोड दिया।

प्रात काल से कुछ पूर्व एक मोटा ताजा हिरन उस तालाब के पास आ पहुचा। ब्याधा ने उसे भी मारने की तैयारी की परन्तु उस मृग ने कहा कि ए ब्याधा! यदि तुमने मेरी तीन हिरनियो को मार डाला है तो लो मुझे भी मार डालो। परन्तु यदि नही मारा है तो मुझे भी छोड दो क्योकि वे मुझे ढूढती होगी और मेरे न मिलने पर बहुत दु खी होगी। यदि आप मुझको मार डालेगे तो वे जिस उद्देश्य से आप से शपथ करके गई है वह नही पूरा हो सकेगा और आपने जिस उद्देश्य से उनको छोडा है वह न पूरा होगा। शुद्ध चित्त वाले ब्याधा ने हिरन को भी छोड दिया। प्रात काल होने पर बहेलिया पेड से उतरा। उतरने मे कुछ पत्ते और भी शिव जी पर गिरे जिससे प्रसन्न होकर शिवजी ने उसके हृदय को इतना निर्मल और कोमल बना दिया कि वह अपने पूर्व हिसा के कार्यो से अत्यन्त विरक्त हो गया और पश्चातापपूर्वक कहने लगा कि यदि वे हिरन व हिरनियाँ अब आयेगे तो मै उन्हे कदापि नही मारूगा।

जब हिरन घर पहुच कर हिरनियो से मिला तब उसने अपनी बात को दृढ रखने के लिए ब्याधे के पास चलने के लिए सबसे कहा। हिरनियाँ तैयार होकर ब्याधे के पास गयी परन्तु शुद्धात्मा बयाधे ने उन्हे मारने से इकार कर दिया। इस प्रकार अहिसा की चरम सीमा पर पहुचे हुए ब्याधे को देख कर शिव जी ने ब्याधे के लिए एक विमान भेजकर अपने लोक मे बुला लिया। अत जो लोग शिवरात्रि के व्रत को पूरे विधि विधान से श्रद्धापूर्वक करते हैं उन पर शिव की अत्यत कृपा सदैव बनी रहती है।

करवा चौथ

सात भाइयो की एक बहन थी। उसने करवा चौथ का व्रत किया। भाई बहन के लिए मिठाई लाए तो बहन ने बताया कि आज मेरा व्रत है, शाम को चन्द्रमा देखकर ही खाऊगी। भाइयो ने सोचा ऐसा उपाय किया जाये जिससे भ्रम मे पडकर बहन यह समझे कि चन्द्रमा उदय हो गया है। इस तरह का विचार करके कुछ भाइयो ने पहाडी पर जाकर आग जलाई और उसके सामने छलनी कर दी जिससे चन्द्र उदय का भ्रम हो गया। इधर अन्य भाइयो ने बहन को उदित चन्द्रमा दिखाया। बहन ने भावज से कहा, चलो पूजन करे। भावज ने जवाब दिया, आप कर ले, मेरा चाँद अभी नही निकला। बहन पूजा कर ज्यो ही भोजन करने बैठी कि प्रथम ग्रास मे बाल निकल आया, द्वितीय ग्रास लेते ही छीक आई और तीसरे मे नाई ने आकर बताया कि उसके पति की मृत्यु हो गई है, इसलिए जैसी बैठी है, वैसी ही भेज दो। चलते समय भावज बोली, पति को यो ही लिए बैठी रहना। ये चौथे परमेश्वरी का प्रकोप है। बहिन वहाँ पहुची और पति के शव को ऐसे ही लिए बैठी रही। मगसिर की चौथ आई। उसके पैर पकड लिए और कहा कि मेरा सुहाग फिर से दो। उसने कहा, पूस की चौथ देगी। इसी तरह महीने के महीने चौथ आती गई और एक–दूसरे की दिलासा देती गई। अन्त मे कार्तिक की करवा चौथ आई तब उसने उसके पैर कसकर पकड लिए। उसने कहा कि अब पैर पकडने से क्या होता है? तब तो भाइयो के कहने पर व्रत खडित कर दिया था। उसने कहा कि माफ कर दीजिए, फिर कभी न होगा। उसने चौथ माता के पैर नही छोडे। चौथ माता को दया आ गई और वह बहू को आशीष देने लगी शील सपूती हो, बूढ सुहागन हो, सात

पूत की माँ हो। "इतना सुनते ही वह बहन बोली, मेरा पति तो मृत है। तब चौथ परमेश्वरी (माता) ने अपने प्रताप से उसे जीवित कर दिया और स्वय चली गई। इस तरह बहन ने अपना लुटा हुआ सुहाग पा लिया और सुख से रहने लगी।

अहोई अष्टमी

कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की अष्टमी को अहोई अष्टमी मनायी जाती है। यह व्रत पुत्रवती स्त्रियाँ ही करती है। अहोई अष्टमी की कथा इस प्रकार है। सात दौरानी जिठानी थी। छह के तो बच्चे थ, सातवी के कोई बच्चा नही था। एक दिन सभी मिल-जुलकर मिट्टी खोदने गई। वहाँ सातवी को अहोई माता ने बैठा देखा। अहोई माता ने सातवी बहू की उदासी का कारण पूछा। उसने बताया कि सबके बच्चे हे, मेरे कोई बच्चा नही है। बात सुनने पर अहोई माता ने कहा आज अहोई अष्टमी है, अहोई माता का चित्र बनाकर पूजन करना, तुम्हारे भी पुत्र होगा। वह घर आई और चित्र बनाकर व्रत-पूजन किया और नौ मास बाद सचमुच लडका उत्पन्न हुआ। कुछ दिनो बाद अहोई माता आई और पूछने लगी, अब तो खुश हो। बहू ने लडके के चुटकी भर दी, बच्चा रोने लगा। अहोई ने पूछा कि क्यो रोता है? बहू ने कहा खेलने के लिए दूसरा भाई चाहता है। इस पर अहोई माता ने कहा होगा। इस तरह बहू ने धीरे-धीरे करके अहोई माता की कृपा से सात पुत्र प्राप्त कर लिए और सुख से रहने लगी। इसी से मिलती-जुलती कुछ अन्य कहानियाँ भी हैं, जिनका सार अहोई देवी अथवा स्याऊ माता की कृपा से पुत्र की प्राप्ति है।

भाई दूज या यम द्वितिया

यमराज और यमुना भाई बहन थे। भाई दूज के दिन यमुनाजी ने यमराज को खाने का निमत्रण दिया। यमराजजी समय पर जीमने आ पहुचे। खूब स्नेहपूर्वक बहन ने तरह-तरह के पकवान, मिठाई खिलाए। यमराज जी उसके इस व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होने बहिन से कहा, वरदान माँगो। यमुना जी बोली, जो कार्तिक मास मे यमुनाजी मे स्नान करे वह यमलोक को नही जावे। इस पर यमराजी बोले यह तो बहुत है। तब इस पर यमुना जी फिर कहा कि जो भाई-बहन हाथ पकडकर इसदिन यमुना मे स्नान करे तो वह यमलोक मे नही जावे। यमराज इस पर एवमस्तु कहकर अपन लोक मे चले गये।

बृज प्रदेश के बालक-बालिकाओं के उत्सव

बृज प्रदेश मे छोटे बच्चो के तीन त्यौहार बहुत लोकप्रिय है जिनके नाम है न्यौरता, टेसू और झाझी तथा साझी।

न्यौरता

क्वार शुक्ल प्रतिपदा से न्यौरता आरम्भ होता है। इसके लिए कन्याएँ घर की किसी दीवार के सहारे मिट्टी का एक घर बनाती है। इस घर के मु ह हाथ-पाव भी बनाए जाते है तथा छत पर चढने क लिए दोनो ओर सीढियॉ भी होती है। इसके अतिरिक्त इस दीवार पर ही एक बडी स्त्री मूर्ति मिट्टी से ठीक घर के ऊपर बनाई जाती है, जिसे लहगे दुपट्टे व तरह तरह के आभूषण से सजाया जाता हैं इस मूर्ति के एक हाथ मे पखा व दूसरे हाथ मे फूल की छडी होती है। इस मूर्ति के आस-पास चॉद-सूरज, तारे, मोर तोता, कमल के फूल, बृ दा (तुलसी) का विरवा आदि भी बनाए जाते है।

प्रत्येक दिन इस मिट्टी की सुघढ मूर्ति को गौरा (पार्वती) मान कर कन्याएँ पूजा करती है पीली मिट्टी से बिना हाथ-पैर को गौरे बना कर सीढियो पर रखी जाती है और गाना गाती है। **गौरा रे गोरा खोलो किवरिया हम आये तेरे पूजन को**-गीत के बोल तुकबन्दी के लिए होते है जब सारी गोरे बन जाती है तब उनकी परछाई थाली मे पानी भरकर देखी जाती है और गीत गाती है जो श्रगार रस से ओतप्रोत होते है-

जैसे- अपनी गौर की झॉई देखू , काका पहने देखू,
नाक मे नथ पहने देखू , कान मे बुन्दा देखू ।

गीत की प्रत्येक कडी मे तरह तरह की श्रृ गार की वस्तुओ की व्याख्या होती रहती है। प्रत्येक दिन गीत गाये जाते है नई गोरे बनाई जाती है और पुरानी वाली गौरो को घर के भीतर रख दिया जाता है। नवरात्रि के नौ दिन तक कन्याएँ इस त्यौहार को मनाती है और अपने लिए अच्छे घर व वर की गौरी से प्रार्थना करती है। दसवे दिन यानि दशहरे के दिन कही कही गौरा व शिव का विधिवत ब्याह रचा कर बिसर्जित कर दिया जाता है तो कही ऐसे ही सभी वस्तुए एकत्र करके किसी तालाब/नदी मे प्रवाहित कर दी जाती है। बृज प्रदेश के आगरे वाले भाग मे ही यह अधिकतर मनाया जाता है। यह मथुरा व आस-पास के क्षेत्रो मे अधिक लोकप्रिय नही है।

टेसू ओर झांझी

पितृपक्ष की साझी के त्यौहार के समाप्त होते ही नवरात्रि मे यह त्यौहार मथुरा, वृन्दावन, गोकुल गोवर्धन, अलीगढ, आगरा व भरतपुर के ब्रजभाषा व सस्कृति वाले क्षेत्रो मे धूमधाम से मनाया जाता है। टेसू व झाझी की कथा महाभारत के प्रमुख योद्धा बभ्रुभावन से जोडी जाती है। इस क्षेत्र मे झाझी उनकी पत्नी मानी जाती है। प्रत्येक दिन छोटे लडके व लडकियॉ टेसू व झाझी को लेकर घर-घर शाम को जाते है और गाना गाकर पैसा मागते है जिस को वे प्रसाद लेने मे खर्च करते है। एक क्विदती के आधार पर टेसू पाडव सेना का एक वीर योद्धा था पर उसे अपने बल व वीरता पर बहुत घमड था। इसी मदाधता मे उसने श्रीकृष्ण का अपमान कर दिया था जिससे कृष्ण रूष्ट हो गये और उन्होने अपने सुदर्शन चक्र से उसका सिर काट दिया था। क्योकि वह एक वीर योद्धा था इसलिए वह महाभारत का युद्ध देखना चाहता था। उसने युद्ध देखने की अपनी इच्छा श्रीकृष्ण के सामने बता दी और श्रीकृष्ण ने उस पराक्रमी व घमडी योद्धा का अनुरोध मानकर उसके सिर को तीन खपच्चियो के साथ युद्धभूमि मे खडा कर दिया। उसकी प्रेमिका झाझी नरकासुर की अति सुन्दर कन्या थी । सिरकट जाने के कारण उसकी शादी बभुवाहन से न हो सकी थी फिर भी वह युद्ध भूमि मे उसके पास ही खडी थी। युद्ध की समाप्ति पर श्रीकृष्ण ने दोनो का विवाह करा दिया। तभी से बच्चे इस त्यौहार को मनाते आ रहे है।

इन दिनो बाजारो मे तरह-तरह के टेसू बिकने के लिए आते है जिनका दाम 5 रु तक का होता है। झाझी मिट्टी की छेद वाली एक छोटा घडा होती है जिस मे नीचे रेतभर कर जलता हुआ दिखाया रख दिया जाता है। लडकियॉ इस को सिरपर रखकर

तथा लडके टेसू को पकड कर साथ-साथ घर-घर गाते हुए जाते है। गीन के बोल सार्थक अर्थ लिए हुए नही होते वरन् तुकबन्दी पर आधारित होते है-जैसे-

टेसू जी, टेसू जी, बहुत दिनो मे आए है।
साथ मे लाये साझी रानी, सारी खुशियॉ लाए है।

तीसरा सबसे अधिक कलात्मक और लोकप्रिय त्यौहार साझी है जिसको क्वारी लडकियॉ गाय के गोबर से पितृ पक्ष मे 15 दिन तक बनाती है।

साझी

साझी ब्रज की कुमारियो का एक लोकप्रिय पर्व है सोलह दिन तक बनने वाले भित्ति चित्र साझी और कुमारियो के कोमल कठो से फूटते सारगर्भित भावपूर्ण गीतो का समागम पूरे ब्रज प्रदेश के गावो-कस्बो और शहरो की गलियो को ना केवल रगीन बना देता है वरन् देशी व विदेशी पर्यटको को भारी सख्या मे अपनी ओर आकर्षित भी करता है।

साझी शब्द का जन्म सस्कृत के तत्सम शबद सन्ध्या के तद्भव रूप से हुआ है। साझी की रचना भले ही दिन भर चलती हो पर उसकी आरती सन्ध्या को ही होती है। ब्रज प्रदेश के तीन रूप देखने को मिलते हैं।

— गोबर, कौडी, मिट्टी, रग-बिरगे कागज, फूल आदि से बनी व सजी हुई साझी चित्रण।

— मिट्टी के चबूतरे पर कागज के स्टेसिलो की सहायता से सूखे रगो से बनाई गई साझी जो कि देव स्थानो और मदिरो मे बनाई जाती हैं।

— पानी के भीतर और पानी के ऊपर बनाई गई साझी।

ब्रज प्रदेश की तरह ही यह उत्सव राजस्थान म "सइया" महाराष्ट्र मे "गुलाबाई" हरियाणा व पजाब मे "साझी" व साझी धूधा मिथिला मे "साझी" तथा मध्य प्रदेश मे "सजा" के नाम से मनाया जाता है। उपरोक्त सभी पर्वो मे कुआरी कन्याओ की आस्था और आकाक्षाए लोक चित्रकारी के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। न केवल भित्ति आकृतिया वरन उस मे प्रयुक्त होने वाली सामग्रियॉ और इस अवसर पर गाये जाने वाले गीतो मे भी काफी साम्य दिखाई देती है। यो तो इस उत्सव से सभी सबधित मिलने वाली लोक कथाओ मे अतर है पर आज के युग मे बालिकाये आदि शक्ति के विभिन्न रूपो पार्वती गौरा भवानी और दुर्गा आदि की आराधना के निमित विभिन्न लोकाचलो मे इस उत्सव को मनाती हैं। मध्य प्रदेश तथा राजस्थान मे प्रचलित लोककथा मे बहुत ममानता है।

ब्रज मे प्रचलित लोककथा के अनुसार एक बहुत ही प्यारी, सुन्दर और सभी की दुलारी लडकी की याद मे यह उत्सव आश्विन के श्राद्ध पक्ष मे 15 दिन तक मनाया जाता है। इस लडकी की असमय ही ससुराल के कष्टो को झलते हुए 16 वर्ष की अवस्था मे मृत्यु हो गई थी। उसकी पुण्य-स्मृति को चिरस्थाई बनाने के लिए सोलह श्राद्ध के दिनो मे साझी पर्व का सिलसिला आरम्भ हो गया। श्राद्ध पक्ष मे ही लोग अपने दिवगत प्रियजनो को याद करते हे, इसलिए इस तरह सामूहिक श्राद्ध के केन्द्र सझया को भी लोक जीवन इस आस्था-अनुष्ठान के माध्यम से प्रतिवर्ष याद किया करता है। इस उत्सव को केवल कुवारी ओर 16 वर्ष तक की अनब्याही किशोरिया ही मनाती हैं। मुह अधेरे ही किशोरिया अपने आचल या छोटी-छोटी बेत की डालियो मे हरसिगार, मोगरे, गुलतेवडी चमेली गुलाब तथा केवडे के फूलो को बटोरती, एक स्थान को भागती लुकती छुपती मिल जाएगी क्योकि उन्हे आज साझ को साझी देवी का श्रृगार जो करना है। फूलो को बीनने के बाद घर के भीतर या बाहर के एक भाग को गोबर से लीपती है। सूर्य चन्द्र, तारे बना कर एक लडकी की आकृति गाय के गोबर से बनाती है और उसे फूलो से शाम तक सजा देती हैं। शाम को बच्चो की टोलिया हसती गाती हाथो मे आरती का थाल लिए एक घर से दूसरे घर को जाती हुई तथा साझी देवी की आरती उतारते दिखाई देती हैं। शाम के धुधलके मे झनकदार आवाज मे साझी की आरती के स्वर सुनाई पडते हैं जिसके बोल प्रश्नोत्तर रूप मे होते हैं-

आरता रे आरता, साझी माई आरता।

प्रश्न- **काहे का दिवला, काहे की बाती**
काहे का तेल जले सारी राती,
जले सारी राती।

उत्तर- **माटी का दिवला, निर्मला बाती**
सरसो का तेल जले दिन राती-
आरता रे आरता

प्रश्न- **साझी का ओढेगी, का पहनेगी,**
काहे का शीष गुथाये जी,
आरता रे आरता

उत्तर- **सालू ओढू गी, लहगा पहनू गी**
मोतियन माग भराऊँगी
आरता रे आरता

आरती के बोल लम्बे भी होते हैं और छोटे भी, पर आरती के अत मे वे साझी माई से भाई के लिए दस और बीस भतीजे, अपने लिए कामदेव के समान वर और सदा सुहागिन रहने के लिए वरदान अवश्य मागती है। साझी को बनाने के लिए गाय के गोबर को स्थान-स्थान से उठाते समय भी वह गुनगुनाना नही भूलती-

साझी तो मागे हरा हरा गोबर,
कहा से लाऊसाझी हरा गोबर।
मेरा तो बोरन अहीरिन को बैठा,
ले साझी मेरी तू हरा हरा गोबर।

इसी तरह साझी को सजाते समय भी गीत चलते ही रहते है

साझी तो मागे साडी जम्फर
कहा से लाऊसाडी जम्फर
मेरा तो बीरन बजाजिन को बैठा
ले मेरी साझी तू साडी और जम्फर।

साझी तो मागे टीका और बिछुवा
कहा से लाऊटीका और बिछुवा
मेरा तो बीरन सुनारिन को बैठा
ले मेरी साझी तू टीका और बिछुवा।

इसी तरह श्रृ गार की प्रत्येक वस्तु, मेवा-मिश्री मिठाई, पान के बीडे आदि गीतो के माध्यम से साझी मागती रहती है। क्वारी लडकियो के पास यह सब कहा से आए तो उसका समाधान बालबुद्धि ने प्रत्येक बार अपने प्यारे भाई (बीरन) की जगह-जगह शादी कराके की।

इस समय गाये जाने वाले गीतो की रचना किसी कवि या गीतकार ने नही की है। ये गीत इन्ही कुमारियो के मन की इच्छाएँ है जिनको बालसुलभ तुकबदियो के रूप मे उन्ही के द्वारा रचे जाते है।

यो तो कन्याओ को अपना बीर पसन्द होता है और वह ही इस उत्सव को उल्लासपूर्वक मनाने मे अधिकतम योगदान देता है पर जब उसकी शादी हो जाती है तब वह शायद उतना सहयोग बहन को नही दे पाता जितना अविवाहित रहने पर दे पाता है इसीलिए एक गाया जाने वाला गीत, मा-बेटी के प्रश्नोत्तर पर बना है जो नारी हृदय की स्वभावगत ईर्ष्या, व्यग्य, हसी-मजाक को सुन्दरता से दर्शाता है-

प्रश्न- **मा,भइया कहा ब्याही परवरिया।**
अलवर ब्याही, पलवल ब्याहो या,
नन्द गाव को ब्याहो परवरिया।

उत्तर- **ना अलवर ब्याहो ना पलबल ब्याहो,**
वह ब्याहो नन्द गाव-परवरिया।
प्रश्न- **मा, भाभी कैसी आई-परवरिया।**

उत्तर- **वह तो आख से अच्छी, नाक से अच्छी,**
पर जीभ से लुच्ची आई- परवरिया

प्रश्न- **या भाभी कितनो खावे, परवरिया**
उत्तर- **वह तो तह का तह उडावे-परवरिया**

प्रश्न- **मा भाभी कितनो लाई, परवरिया**

उत्तर- **वह तो आठ बिल्लैया, नौ सौ बन्दर**
सोलह चूहे लाई- परवरिया

साझी एक ऐसा लोक उत्सव है जिस मे परिवार के बहुत से लोग सम्मिलित होते है। इस उत्सव मे मामा का योगदान भी होता है। जिस तरह ब्याही लडकी को परिवार के प्रत्येक सदस्य द्वारा घर मे न्यौता मिलता है उसी प्रकार साझी को मामा के यहा भी न्यौता मिलता है। कन्याएँ हसी मजाक के साथ गाती हे-

मेरी, सॉझी, ऐलो मामा के घर न्योती।
मामा मेरा छैल छबीलो, मामी बडी सजीली
ओ मामा देगा दूध कटोरा, मामी देगी साडी,
और कब पियोगी दूध कटोरा, कब पहरेगी साडी
ओ लुढक जायेगा तेरा दूध कटोरा, धरी रहेगी साडी।

इसी तरह बाल सुलभ अनेको गीतो की रचना कुमारिया करती रहती है। इनका आधार सामाजिक रीति रिवाज व व्यवहार होता है।

साझी चित्रण का आरम्भ भाद्रपक्ष की पूर्णिमा से आरम्भ होता है। उस दिन एक लडकी (जिसको बीजन बेटी कहते हैं) द्वारा चाद व सूरज की रचना दीवार पर गोबर से की जाती है। सन्ध्या समय उसकी आरती उतारी जाती है। श्राद्ध पक्ष के प्रथम दिन भी बीजन बेटी का चित्रण होता है। इसके बाद दूसरे दिन दो खाने (कमरे) वाल कोट, तीज को तीन खाने वाला कोट, चौथ को चौपड, पचमी को पाच पान, छठ को छबरिया, सप्तमी को स्वस्तिक, अष्टमी को आठकली वाला फूल, नवमी को नौका भ्रमण, दसवी को दस सुपारी ग्यारस को ग्यारह नारियल, द्वादश को बारह दौने, तेरस मे डोली के भीतर साझी देवी, चौदस को एक लगडा ब्राह्मण तथा एक काला कौआ तथा अमावस को एक कोट बनाया जाता है। इसमे उन सभी चीजो को चित्रित किया जाता है जिसका अकन पिछले 15 दिनो मे किया गया है। हर दिन का चित्रण सध्या को आरती उतारने के बाद दूसरे दिन सुबह दीवाल से हटा कर एक स्थान पर जमा कर दिया जाता है विधिवत गोबर से लीपने के बाद दूसरे दिन का चित्रण होता है यही नियम अमावस तक चलता रहता है।

अमावस के सइया कोट को बनाने मे परिवार के अन्य सदस्य भी साथ देते हैं क्योकि वह बडा होता है और उसको सुन्दर बनाने मे बालिकाओ मे होड लगी रहती है। गोबर से इस कोट का निर्माण करने के बाद बहुरगी कागज, पन्नी, मोती, सीप, कौडी हल्दी और कुमकुम, शीशे के टुकडे, गिलट या मिट्टी के गहने, सुनहरी और रूपहेली पन्नी आदि का प्रयोग होता है पर कही-कही बालिकाए केवल रग-बिरगे फूलो या फिर कोडी स ही सजाती हैं। इस दिन के चित्रण मे अन्य दिनो के सभी अभिकल्पो के साथ-साथ भाई, बहन, एक काला कौआ तथा एक लगडा ब्राह्मण भी बनाया जाता है। प्रतिदिन बनाने वाली साझी की वस्तुओ मे जाति के आधार पर अतर आ जाता है। लगभग 60 प्रकार के अभिकल्पो का चित्रण किया जाता है जो ना केवल जातिगत वरन् भाषागत विभिन्नता को दर्शाती है।

यो तो यह क्वारी लडकियो का त्यौहार है। जो लडकिया इसे शादी से पहले मनाती हैं वे शादी के प्रथम वर्ष मे सोलह कोटो की पूजा करके इस त्यौहार की समाप्ति करती है। बाद मे भी लडकी के ससुराल को सोलह कटोरियो मे पेडे भर कर भेजे जाते हैं।

अमावस्या के बाद किसी भी शुभ दिन अथवा दशहरा /शरद पूर्णिमा के दिन सूखी सझया को एकत्र करके नदी, तालाब या बावडी मे विसर्जित कर दिया जाता है।

पारपरिक माटी-कलाओ में ब्रज की साझी कला अप्रतिम है। यह भित्ति-अलकरण-कला (म्यूरल) की अनूठी बानगी है। अबोध मानवी-स्पर्श पाकर विकसित मूर्तिकला की यह जीवन-परपरा सदियो से अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं।

साझी कला के न्ये अन्य रूप देवालयो के आश्रय मे पनपे हैं। लोक वार्ता के अनुसार राधा, कृष्ण के आगमन की प्रतीक्षा मे मार्ग को सुन्दर अभिकल्पो से जो कि फूल और पत्तो से बनाती थी सजा देती थी। कृष्ण के प्रेम मे भीगी राधा प्रतीक्षा की घडियो को इसी तरह प्रतिदिन बिताती थी पर कब और कैसे फूलो का स्थान सूखे रगो ने ले लिया यह कोई नही जानता। एक अन्य लोक मान्यता के अनुसार कृष्ण ने माननी राधा को मनाने हेतु साध्य वेला मे फूलो से उस का अप्रतिम चित्र बनाया था राधा के सलोने रूप को फूलो की सुगध मे बसा दिया- राधा अति प्रसन्न हो गई और ऐसी अनुरागवती सध्या साझी कहलाई।

आज इस सुन्दर कला को बनाने वाले कुछ ही लोग शेष रह गए हैं। इसकी छटा बल्लभ सप्रदाय के मदिरो मे या विशेष उत्सवो मे आज भी मथुरा व वृदावन के देवालयो मे मिलती है। पहले कलाकार कागज पर गोचरण लीला, दान लीला, गोवर्धन लीला, कालिया दमन, रासलीला आदि लोकप्रिय लीलाओ मे से किसी एक का खाका तैयार करता है। तत्पश्चात एक ही लीला के लिए रगो के प्रयोग के आधार पर करीब आठ या दस तक स्टेसिल तैयार करते हैं जिसमे जहा रग भरना हो वही स्थान कटा हुआ होता है और इतनी बारीक व सफाई से स्टेसिल बनाया जाता है कि एक स्टेसिल दूसरे पर एक दम फिट हो जाता है।

इसके बाद पहले मिट्टी की वेदी तैयार की जाती है और वेदी की ऊपरी सतह को खूब अच्छी तरह चिकना कर लिया जाता है। बेदी मे जब हल्की सी नमी रह जाती है तभी सिल खडी के सूखे रगो और कटे हुए स्टेसिल की सहायता से चित्रकारी आरम्भ की जाती है। कलाकार अपनी कल्पना व रचनात्मक शक्ति के आधार

पर कुछ ही घटे मे सपूर्ण बेदी को चित्रमय बना देता है। इस काम मे अत्यन्त सावधानी और दक्षता की आवश्यकता है।

साझी की तीसरा रूप जल साझी है। इसमे कलाकार की कल्पना और दक्षता देखते ही बनती है। कलाकार पहले किसी थाली को भीतर से चिकना कर लेता है। तत्पश्चात स्टेसिल और सूखे रगो की सहायता से किसी भी लीला को चित्रित करता है। रग जब चिकनाई मे कुछ समय पश्चात अच्छी तरह चिपक जाते हैं तब थाली को धीरे-धीरे पानी से भर देते हैं इसलिए सुन्दर आकर्षण साझी पानी के नीचो से झाकली दृष्टिगोचर होती है। कभी-कभी तो ये कलाकार बहुत कुशलता से थाली के एक भाग मे सूखी साझी व एक भाग मे जल साझी को भी चित्रित करते हैं।

आजकल साझी कला के इस रूप का प्रचलन बहुत ही कम हो गया है और उसका स्थान केले के पत्तो की साझी ने ले लिया है। साझी चाहे सूखे रगो से वेदिकाओ पर बनाई जाए या थाल में जल साझी के रूप मे या फिर कुमारियो द्वारा गोबर, मिट्टी, कौडी, फूल आदि अनेको वस्तुओ से, दिन पर दिन लुप्त होती कला की श्रेणी मे आ गई है। अब इसके ना तो प्रशसक ही अधिक रहे और न आश्रयदाता। साझी के इन स्वरूपो के साथ-साथ मथुरा के वल्लभ सपद्राय के मदिरो मे आरती की थाली को सजाने की सुन्दर कला विकसित थी। प्रत्येक दिन आरती के सुन्दर थाल आटे व गुलाल व अन्य रगीन दालो आदि से सजाये जाते थे और उसके मध्य दीपको को सजा दिया जाता था जो देखते ही बनता था आज यह कला भी विलुप्ति के कगार पर है।

प्रचलित संस्कार

सस्कार किसी भी धर्म या सप्रदाय के महत्वपूर्ण अग होते है। इतिहास के प्रारभ से ही वे धार्मिक तथा समाजिक एकता के प्रभावकारी माध्यम रहे है। उनका प्रार्दुभाव सुदूर अतीत मे हुआ था और कालक्रम से अनेक परिवर्तनो के साथ आज भी जीवित हैं। हिदू सस्कारो का वर्णन वेदो, कुछ सूक्तो, कतिपय ब्राह्मण ग्रथो, धर्मसूत्रो, स्मृतियो एव परवर्ती निबध ग्रथो मे पाया जाता है। आज के प्रचलित सस्कारो मे कुछ केवल प्राकृतिक थे जो समय के साथ सामाजिक परिस्थितियो, धार्मिक विश्वासो से प्रभावित हो गए। सस्कारो को पाच वर्गो मे बाट सकते है–

— **प्रागजन्म सस्कार (जन्म से पहले)**

— **बाल्यावस्था के सस्कार**

— **शैक्षणिक सस्कार**

— **विवाह सस्कार**

— **अत्येष्टि सस्कार**

प्रागजन्म के अतर्गत गर्भाधान सस्कार तथा पु सवन के सस्कार है जो एक प्रतिशत ही अब लोग करते हैं। आठवे माह को भावी मॉ की गोद भरना अभी भी होता है।

बाल्यावस्था के सस्कार ही आजकल अधिक प्रचलित हैं जिसके अतर्गत जाति कर्म, छठी दष्ठौन/नामकरण, अन्न प्राशन, चूडाकरण (मु डन) और कर्णविध सस्कार आते हैं। यह सभी सस्कार भारतीय सस्कृति मे आस्था रखने वाले अवश्य करते हैं। कुछ बिल्कुल रीतिरिवाज के अनुसार करते हैं और कुछ समय के अनुसार।

शैक्षणिक सस्कार के अतर्गत विद्यारभ सस्कार तथा उपनयन सस्कार आते है आज भी कुछ लोग इसपर विश्वास रखते हैं और इन सस्कारो को विधिवत करते हैं। इन मे ब्राह्मण जाति प्रमुख हैं।

विवाह सस्कार का अपना अलग महत्व है। जन्म के बाद विवाह हिन्दू सस्कारो मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है जिसमे वर कन्या के सगाई, रोक, टीका, गोद भरना, विवाह से पहले तथा विवाह के समय के तेल चढाना, गोरी पूजा, विवाह से पूर्व का स्नान, वस्त्र परिधापन, जयमाला, सप्तपदी सिदूर दान, कन्यादान, मातृका पूजन, देवी पितर पूजन, कोहबर–घर का हसी मजाक का वातावरण, दिये की बाती को मिलाना, पान और मिष्ठान खिलाना, आचार्य दक्षिणा, बिदाई आदि अनेको रिवाज हैं जिन को लोग करते है। ब्रज प्रदेश मे अभी भी लोगो को शादी विधिवत कराने का शौक है।

विवाह का प्रथम प्रायोजन सतान उत्पन्न करके जाति विशेष की अक्षुणता बनाए रखना है जिस तरह उपरोक्त रीति रिवाज कन्याघर मे प्रचलित हैं वैसे ही कुछ सस्कार विवाहोपरात लडके के घर मे भी किए जाते हैं। विवाह के बाद वर–वधू अपने घर आते है। यहा उनका स्वागत आरती के साथ होता है। इसके बाद देवी पितर की पूजा, रात्रि को स्त्री–पुरूष का सासारिक मिलन, तथा दिन मे कुआ पूजना, चक्की पूजना, कुछ खेल आदि का आयोजन किया जाता है। धीरे–धीरे स्त्री पुरूष मिलकर जीवन नैया को खेने लगते हैं और परिवार को बढाते हैं।

हिन्दू जीवन की अतिम सस्कार अन्तयेष्टि हैं जिसके साथ वह अपने एहिक जीवन को अतिम अध्याय समाप्त करता है। मृत्यु के बाद मृतक के पास जलते दीपक रखना और लाश उठाने जाने पर उस स्थान पर स्वास्तिक रखने का प्रचलन है।

ब्रज प्रदेश मे इन सभी सस्कारो को किया जाता है पर हमेशा उस शुद्धिता से नही जैसा कि हमार धर्म ग्रथो मे लिखा हुआ। कुछ सस्कार जिसमे उपनयन प्रमुख हैं बहुत कम लोग करते हैं।

ब्रज मे इन सभी सस्कारो से सबधित बहुत से लोकगीत हैं जो सोहर या जच्चा गीत, बन्ना, बन्नी, सेहरा, आरती के गीत, हल्दी व तेल चढाना के गीत, सिटनी (गाली) और बिदाई गीत के नाम से प्रसिद्ध हैं। विवाह और जन्म सबधी बहुत से भित्ती व भूमि चित्र भी बनते हैं तथा घडो पर चित्रकारी होती है। भूमि व भित्ति चित्रो मे जाति के आधार पर बहुत अतर होते हैं। ये भित्ति चित्र अधिकतर छोटे तथा गेरू से लिखे जाते हैं। तथा वर–वधू द्वारा दोनो घरो मे पूजे जाते हैं। कलात्मकता की दृष्टिकोण से यह बहुत साधारण होते हैं। केवल चतुर्वेदी ब्राह्मणो के यहॉ के कुछ रगीन चित्र (अमला) सुदर होते हैं जो कही कही ही देखने को मिलते हैं।

ब्रज की लोक कलाएँ

ब्रज प्रदेश मे कला सर्वत्र बिखरी पडी है। चैत्र मास को नवरात्रि मे दुर्गाष्टमी के अवसर पर मगल कलश की स्थापना करने के बाद देवी का चित्रण या तो गेरू से दीवार पर या फिर कलश के चारो ओर चौक व मगल घट पर ओम या स्वास्तिक का आलेखन किया जाता है। देवी की मूर्तियाँ इस समय बाजारो मे उपलब्ध होती हैं।

चैत्रमास के पश्चात श्रावण मास मे भूमि अलकरण यथेष्ठ सख्या मे देखने को मिलते हैं। **नागपचमी** के अवसर पर नाग चित्रण, **रक्षा बन्धन** के अवसर पर सोना या सरमन जो कि श्रवण कुमार का बिगडा हुआ रूप है का चित्रण दीवारो व दरवाजो पर गेरू या हल्दी से किया जाता है। स्त्रियॉ भित्ति पर बहगी मे उठाए हुए श्रवण कुमार का चित्राकन अपनी ही तरह की लोकशैली मे बहुत ही निपुणता से करती है। राखी के अवसर पर श्वेताम्बर जैनियो के यहॉ भित्तियो पर राखी के सुन्दर-सुन्दर डिजाइन गेरू से बनाए पाए जाते है तथा इन सभी चित्रो को सेमई, खीर, अथवा मिष्ठान का भोग लगाया जाता है तथा रोली चावल का टीका भी लगाया जाता है।

भादो मास मे **राधाष्ठमी** तथा **कृष्णजनमाष्टमी** का त्यौहार मनाया जाता है। इस समय बाजार सभी तरह से देवी देवताओ की मूर्तियो से भर जाता है। राधा-कृष्ण को एक साथ कदम्ब के नीचे खडी मूर्तियॉ, वासुदेव की बालक कृष्ण को यमुना के मध्य ले जाती मूर्ति, कारागार मे वासुदेव-देवकी तथा कृष्ण की अन्य लीलाओ सबधी मूर्तियॉ, पेपर मशी, टेराकोटा, प्लास्टिक आदि से बनी सभी जगह मिल जाएगी। इसके अतिरिक्त हिडोले, प्लास्टिक के पेड पौधे तथा झाकी सजाने के अन्य उपकरण भी प्रचुर मात्रा मे बाजार मे उपलब्ध होते है। घरो के भीतर श्रीकृष्णजन्माष्टमी का कई रगो मे, काले रग या गेरू से भित्ति चित्रण मिल जायेगे। इसमे श्रीकृष्ण के जीवन सम्बन्धी सभी पहलू दर्शाए जाते हैं। कृष्ण लीला सबधी मुखौटो, आभूषण, वस्त्र आदि से बाजार भर जाता है। **गणेश चतुर्थी** के समय सुन्दर-सुन्दर गणेश की मूर्ति बाजार मे उपलब्ध होती है। पर यहॉ गणेश उत्सव का वह रूप नही है जो महाराष्ट्र मे है। इसिलए गणेश की मूर्तियो मे उतनी विविधता नही है।

आश्विन मास मे ब्रज प्रदेश पूरी तरह से कलामय हो उठता है। घर-घर साझी का चित्रण दीवारो पर लगभग पितृपक्ष के चौदह दिन तक और अमावस्या को सइया कोट विभिन्न आकार और रूपो मे दिखाई पडते हैं। यह त्यौहार केवल ब्राह्मणो, यादवो व अहीरो के यहॉ अधिक मनाया जाता है। कुम्हार इस उत्सव को ना केवल मनाते है वरन् अन्य लोगो के लिए साझी के मुखौटै व श्रृगार का सामन भी तैयार कर के देते है। यह उत्सव वास्तव मे जमीन से जुडे हुए लोगो का उत्सव है व्यापारी व अन्य वर्गो का नही। इसलिए कायस्थ, बनिये, खत्री आदि इस उत्सव को नही मनाते हैं।

इसी मास मे टेसू व झाझी तथा न्यौरता का त्यौहार भी मनाया जाता है इसलिए बाजार मे टेसू व झाझी विभिन्न रूपो मे मिलते है जिन के दाम 5 रु से लेकर 1500 रुपयो तक होते है। इस माह मे नवरात्रि व दशहरे का त्यौहार व रामलीला का आयोजन भी होता है। जिस के कारण राम सीता की मूर्तिया, राम लीला सबधी मुखौटे, रावण, कुम्भकरण व मेघनाद के पुतले, बच्चो के लिए विभिन्न प्रकार के खिलौने जो कि पेपरमशी, लकडी, कागज टेराकोटा आदि की होती है, प्रचुर मात्रा मे बाजार मे उपलब्ध होती है।नवरात्रि की वजह से देवी की विभिन्न रूपो की मूर्तिया भी बाजार मे मिलती है।

कार्तिक मास के प्रत्येक त्यौहार दीवाल या भूमि पर चित्रित किए जाते हैं। **करवाचौथ, अहोई अष्टमी, दीपावली, गोधन, भाईदूज व देवउठावन इकादसी** पर प्रत्येक जाति के लोग या तो दीवालो पर गेरू और चावल के पीठे से या फिर विभिन्न देवी देवता, स्वास्तिक, सूर्य-चद्र, तुलसी, गगा-यमुना व पूजा के सामान आदि का चित्रण किया जाता है। करवा चौथ व अहोई अष्टमी को लोक कथा पर आधारित तथा देवउठावन इकादसी पर तरह तरह के चौक बनाए जाते हैं। इसमे बच्चो के खिलौने भी चित्रित किए जाते है। इन सभी त्यौहारो पर भूमि व

भिनि चित्रण होता है केवल गोधन पर भूमि पर गोबर से मानवाकृति बनाई जाती हैं। यहाँ पर कॉस की मूर्ति भी बनाई जाती हे निस को धड से अलग किया जाता है यह त्यौहार कार्तिक माम क शुक्ल पक्ष की दशमी को बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता हे नो उत्तर प्रदेश के अन्य भागो मे देखने को नही मिलता।

दीपावली के अवसर पर तरह तरह के सुदर खिलौने से बाजार भरा होता है बच्चो के लिए अनेको प्रकार के कागज के खिलौने, कडोल पटाखे सजाने का सामान, मिट्टी के खिलौने, गुडियॉ,गुडियो की गृहस्थी, श्रीकृष्ण-राधा, राम परिवार, हनुमान, गौरी सरस्वती, गणेश लक्ष्मी, दीये, अटारी, शिव परिवार,चित्रित घडे व दीये आदि से बाजार भरा होता है। तरह तरह की मिठाइया भी हलवाई काफी दिनो से बनाना आरभ कर देते है। नए बर्तनो से दुकाने जगमगा उठती है। हर दुकानदार अपनी दुकानो को यथासभव सुदर बनाने की कोशिश करता है। दुकानो पर भी गणेश लक्ष्मी की मूर्तियाँ रखी जाती हैं और देवालय सजाए जाते है। पुताई करके घर आगन साफ किया जाता है जिसके कारण साफ सुथरे चित्रित घर देखते ही बनते है।

कार्तिक मास के जाते ही खिलौनो का ससार लुप्तप्राय हो जाता है। सर्दी के प्रकोप से त्यौहार कम हो जाते हैं पर शादियॉ आरभ हो जाती है। इस समय मकानो मे चित्रण विवाह आदि के अवसर पर ही होता है जिसमे भूमि व भित्ति दानो ही तरह के चित्रण होता है। बच्चो के जन्म पर स्वास्तिक या ओम छठी पर छबरियाँ जो कि गोबर या गेरू से बनाई जाती है, शादी पर माये या देवी पितर, चतुर्वेदी परिवारो मे छठी पर नाग चित्रण किया जाता है। शादी के समय के भूमि चित्रण, नवग्रह, सवर्तोभद्र आदि पडित ही बनाते हैं पर कलश पर चित्रण अधिकतर घर की औरते ही करती है जो मडप सजाने के काम आते है।

कार्तिक मास के बाद चित्रण का ससार बसत पचमी से शुरू होता है तथा होली तक चलता हैं। बसत पचमी के कुछ पहले से सरस्वती पूजा के लिए सरस्वती की मूर्तियाँ बजारो मे आ जाती हैं। बसत पचमी को जहा कामदेव की पूजा भी होती है वहा उनका चित्र पटले पर बनाकर पूजा जाता है। सरस्ती पूजन मे भूमि चित्रण भी किया जाता है। कुछ दिनो बाद से होली के चौक बनने घर आगन मे शुरू हो जाते हैं। जिसमे रग भरनी एकादशी से गुलाल के रग भर दिए जाते हैं। शाम को प्रत्येक दिन गोबर से लीपकर तरह तरह के चौक बनाए जाते हैं जिसमे कमल के फूलो का तरह तरह से चित्रण किया जाता है। कायस्थ, चतुर्वेदी ब्राह्मण, क्षत्रिय स्वर्णकार तथा ब्राह्मणो की कुछ जातियो मे 15 या बीस दिन अन्य मे केवल होली के दिन भूमि चित्रण किया जाता है। इस समय उत्सव सबधी खिलौनो से बाजार खाली होता है। यह दोनो ही त्यौहार देवालय और रगो के उत्सव हैं इसलिए गुलालो के विभित्र रगो से जिसमे सुनहरा व रूपहला रग भी होता हैं इसलिए गुलालो के विभित्र रगो से जिसमे सुनहरा व रूपहला रग भी होता है बाजार सजे होते हैं।

अधिकतर भूमि और भित्ति अलकरण उत्सव व त्यौहार सबधी होते हैं इसलिए उन त्यौहारो पर ही दिखाई पडते हैं। ये चावल के पीठे, गेरू, हल्दी और विभित्र रगो से तैयार होते हैं। त्यौहार सबधी मुख्य देवी देवता का चित्रण बीच मे बडे आकार का होता है। लोककथाओ से सबधित अन्य वस्तुओ का चित्रण बाद मे होता है। सूर्य व चद्रमा की आकृति प्राय सभी भित्ति चित्रो मे होती है। चिडियो मे मोर और तोता, जन्तुओ मे साप, चूहा और बिच्छू जानवरो मे हाथी, घोडा, ऊट प्रमुख हैं। शुभ चिह्नो मे से सब से अधिक प्रयोग स्वास्तिक, ऊट और कमल के फूल का होता है। देवताओ का चित्रण त्यौहार सबधी होता हैं। सब से अधिक खिलौने राधाकृष्ण सबधी और सब से अधिक त्यौहार मनाने का उत्साह राधाकृष्ण सबधी उत्सवो मे दृष्टिगोचर होता है।

मदिरो मे आयोजित भूमि पर रग साझी, जल साझी, केले के पत्तो की साझी फूल साझी और घर के भीतर बनने वाली गोबर की साझी कला मे ब्रजवासी अद्वितीय हैं। इसी तरह श्रावण मास के हिडोले, झाकिया तथा विभित्र अवसरो पर श्वेत, गुलाबी हरी आदि घटाए जो देवालयो मे सजाई सवारी जाती हैं, ब्रज प्रदेश की अपनी ही विशेषता है जो सपूर्ण उत्तर प्रदेश मे और कही देखने को नही मिलती।

कृष्ण लीला और रास लीला के मचन के लिए विभित्र मडलियो ने देश विदेश मे सम्मान प्राप्त किए हैं। फाग, होरी, रसिया व हवेली सगीत का अन्य गायन शैलियो से कोई मुकाबला नही है। इन सभी का आधार शास्त्रीय सगीत है। नृत्यो मे चरकुला लोक नृत्य, रासलीला के नृत्य व नौटकी नाट्य शैली की प्रमुख विधा हैं।
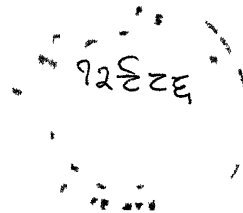
शुभ अवसर पर
घड़ो पर चित्रकारी

शुभ अवसर पर
घड़ो पर चित्रकारी
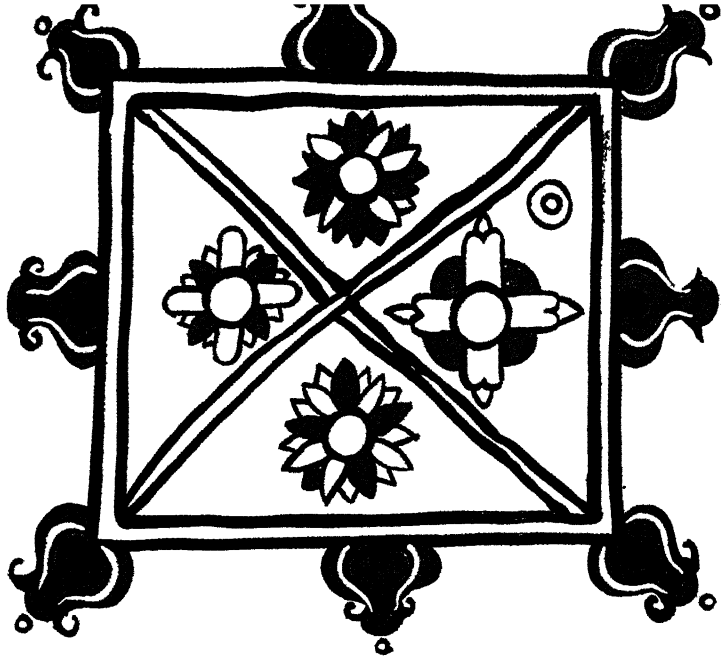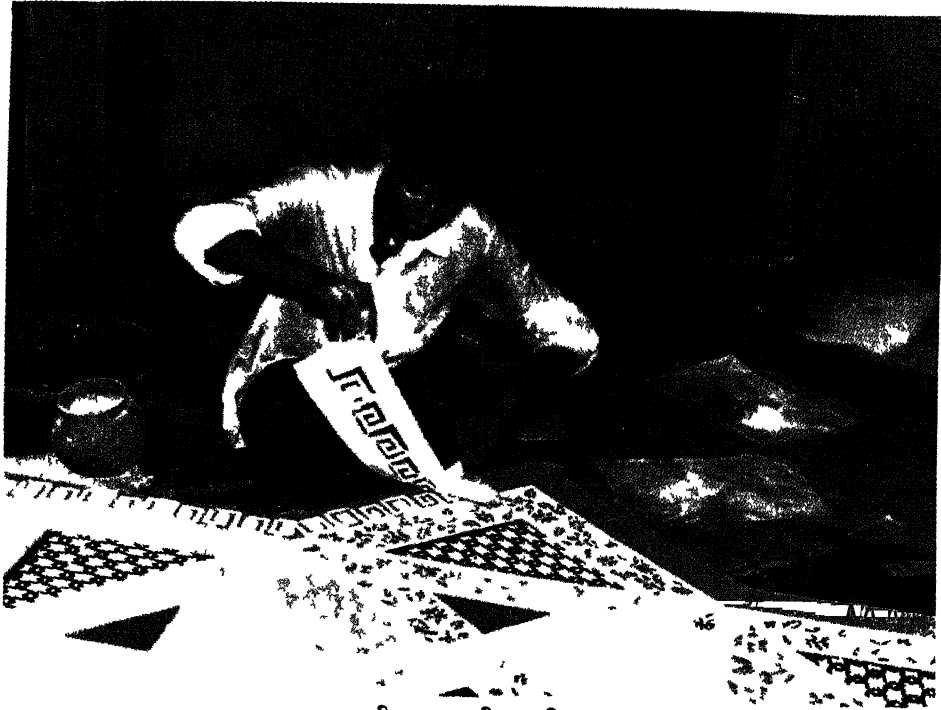
शुभ अवसर पर बनने वाली चौक

जमीन पर बनी साझी
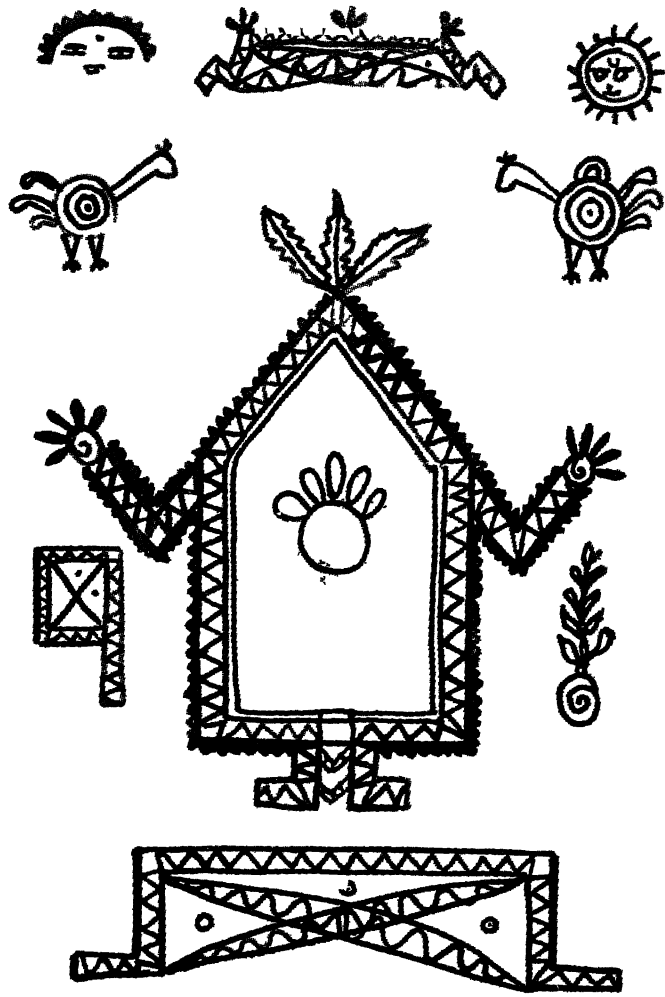
भाऐ
(श्वेत श्याम)
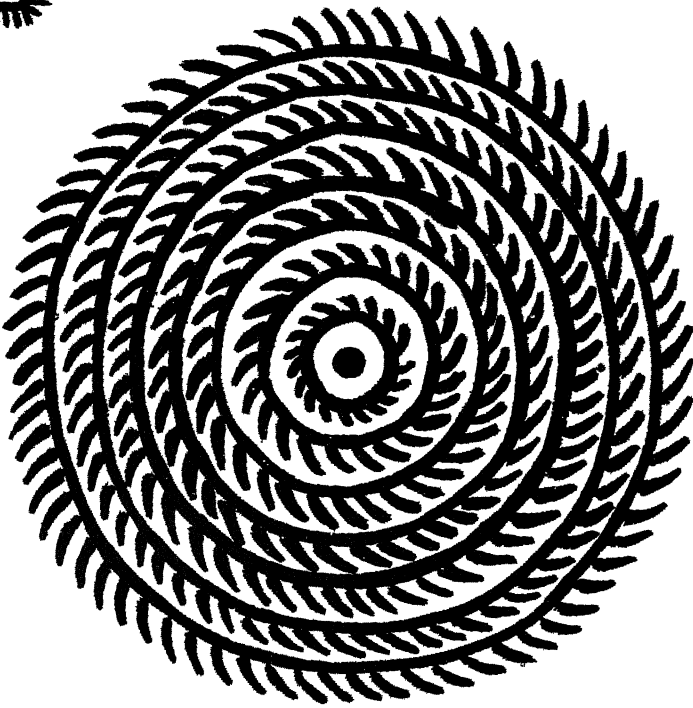
छबरिया
छठी सस्कार पर गोबर
या गेरू से बनाई जाती
है।

करवा चौथ
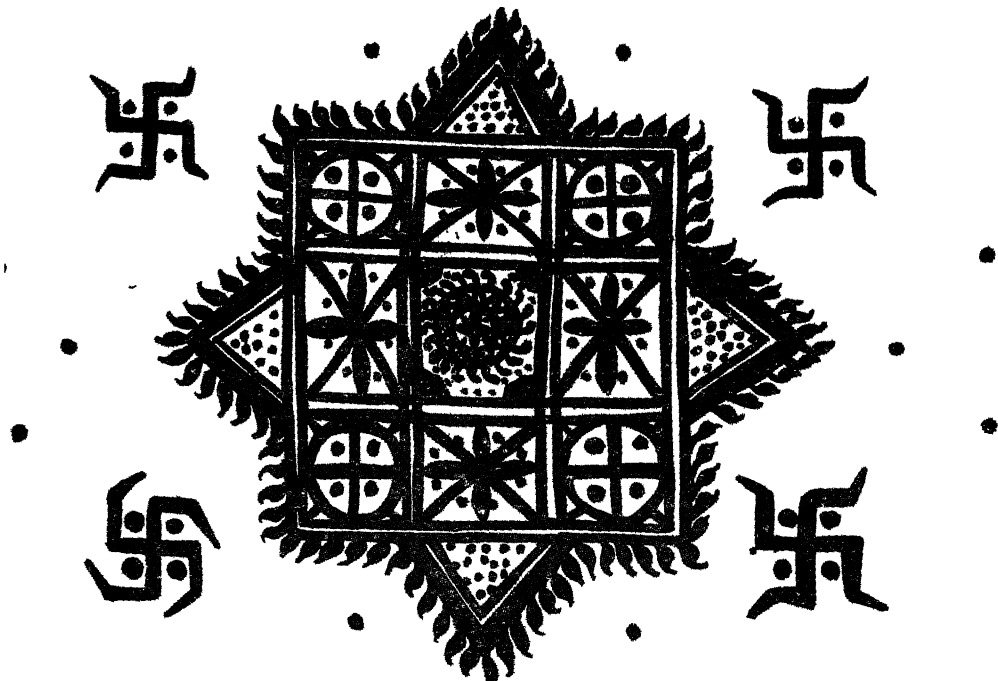
शुभ अवसर पर बनने वाली चौक

साझी का कोट

साझी का कोट

साझी का कोट

साझी का कोट

साझी का कोट

जल साझी

टेसू झांझी

टेसू झाझी
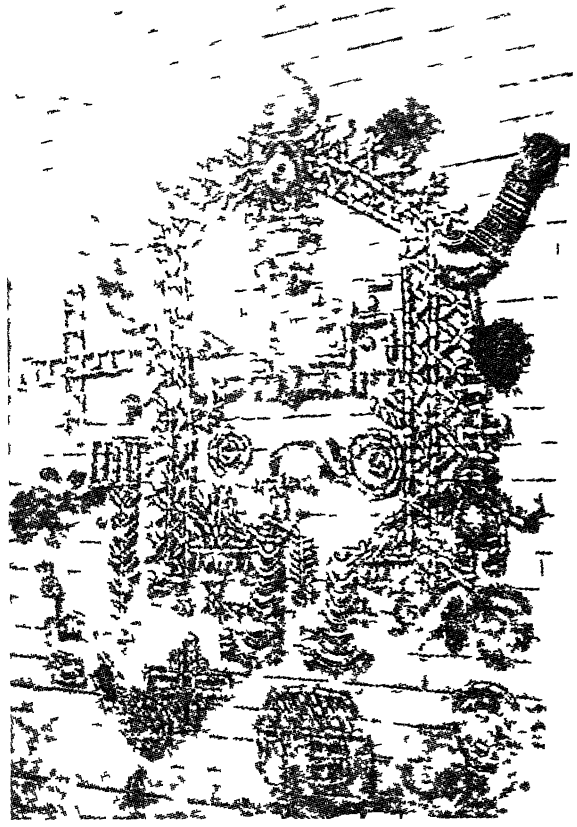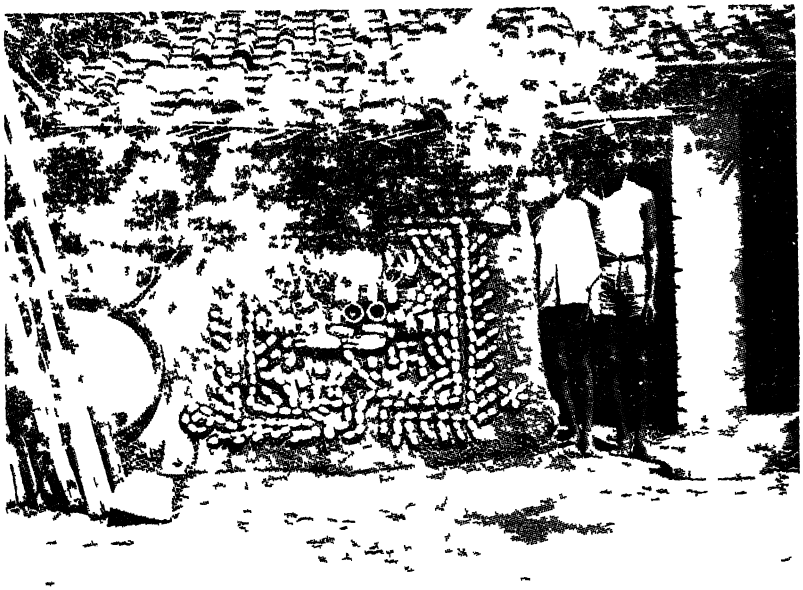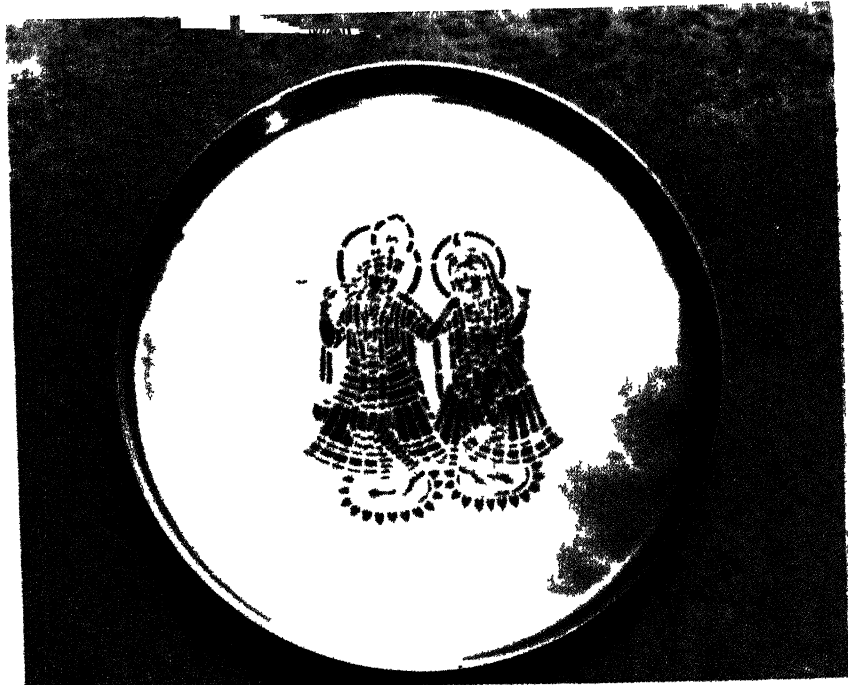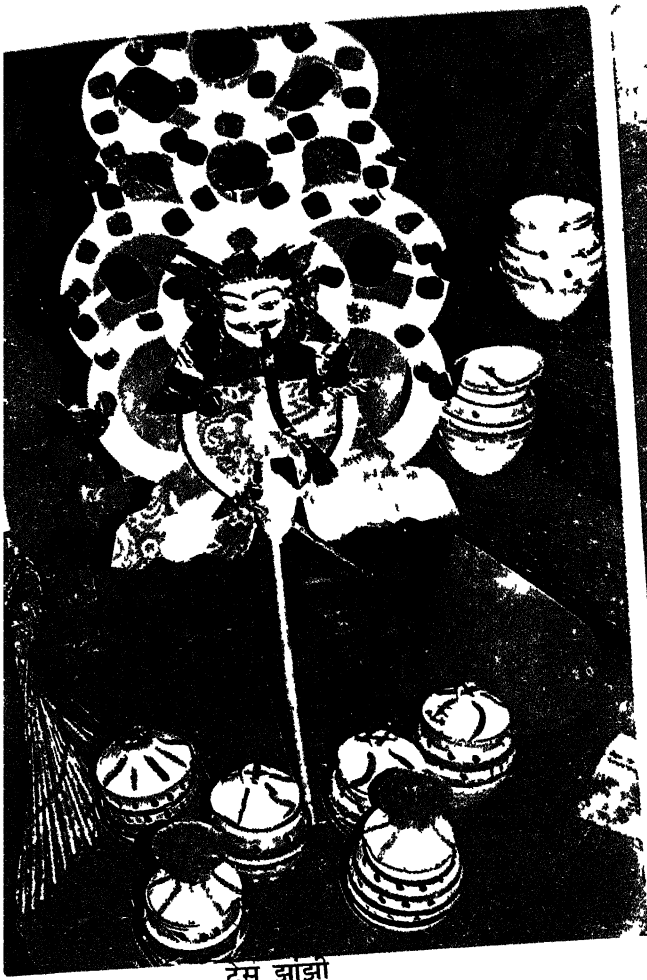
साझी का स्टेन्सिल
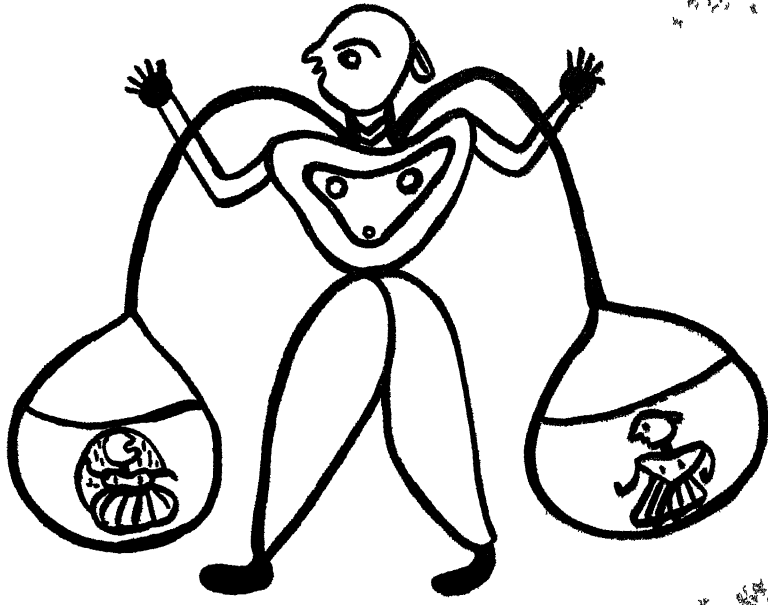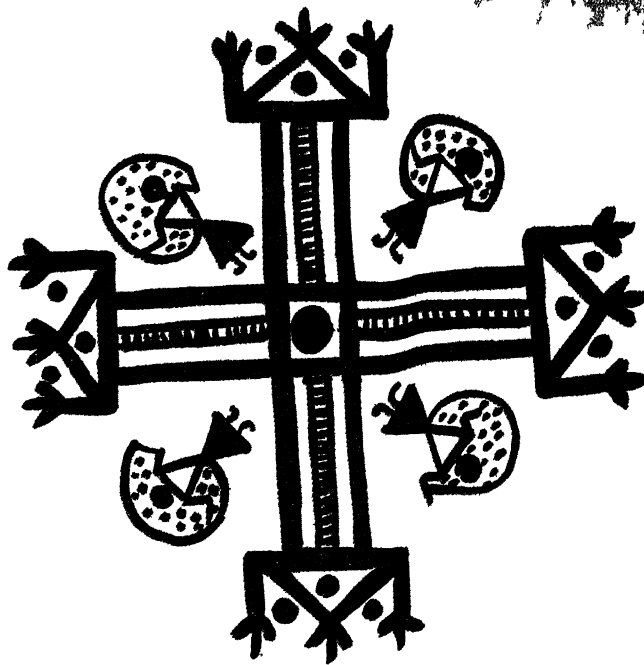
रक्षाबधन

रक्षाबधन
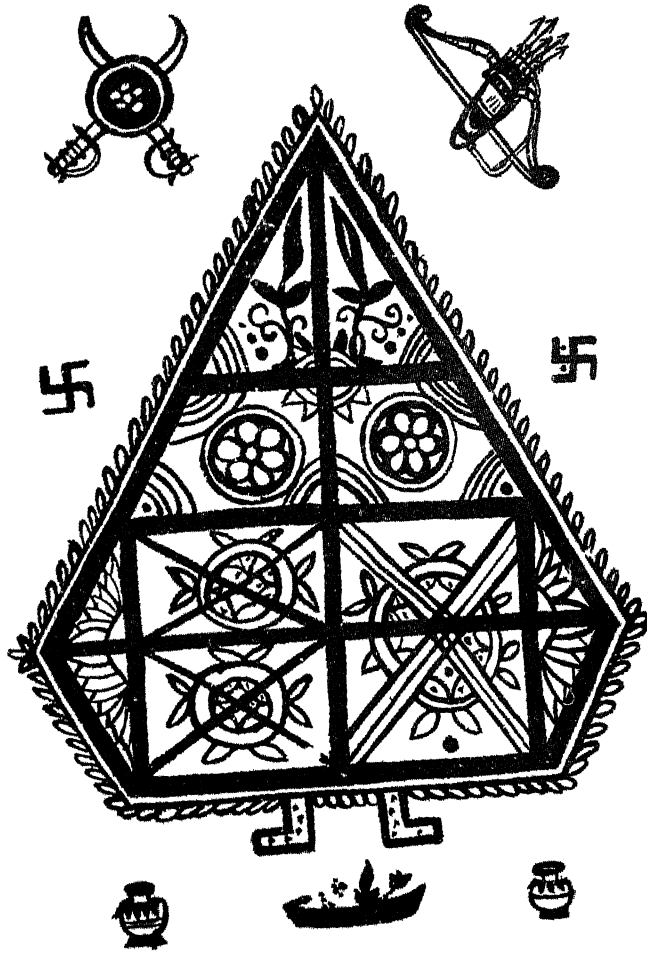
दशहरा

जन्माष्टमी

नाग पचमी

दीपावली भित्त चित्र
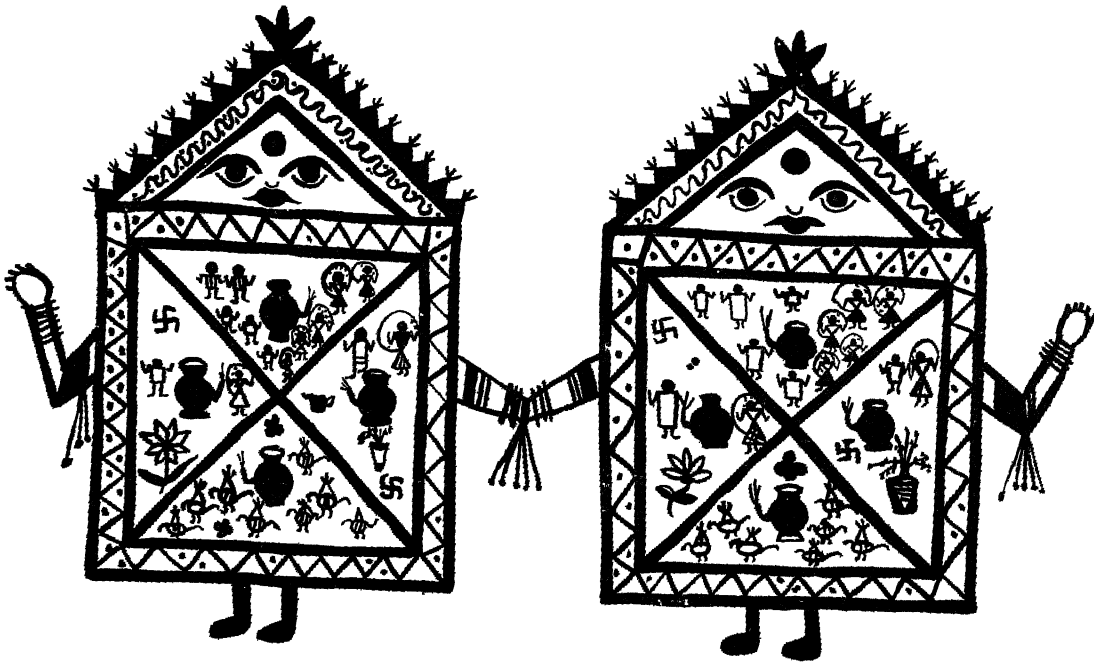
अहोई अष्टमी
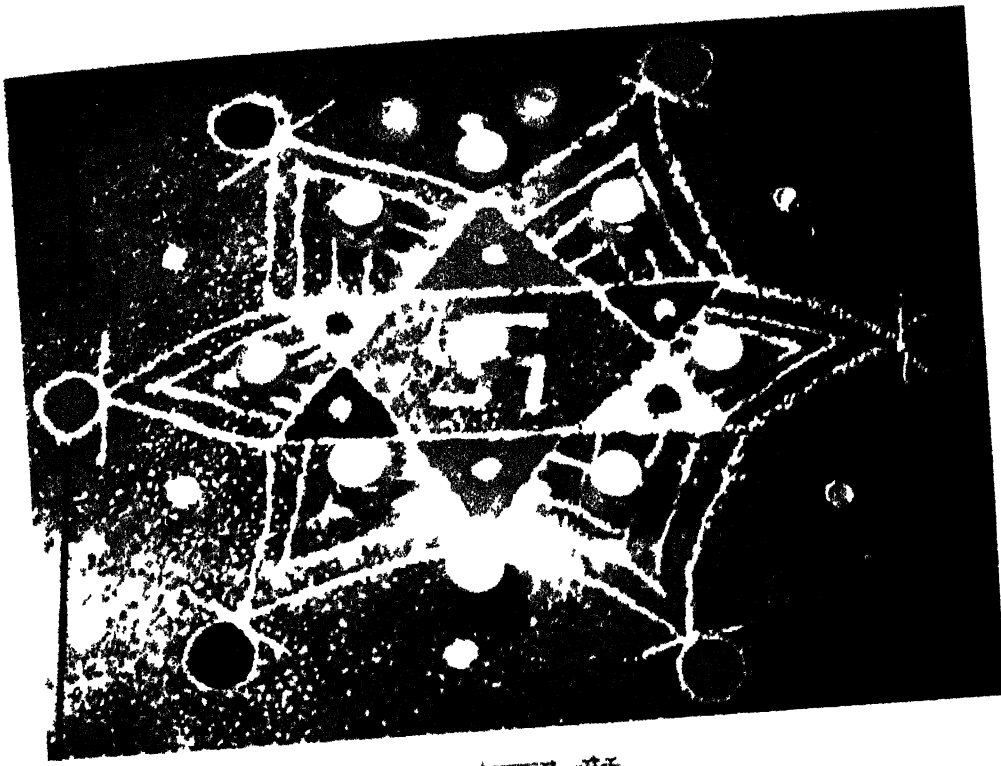
गपावली चौक
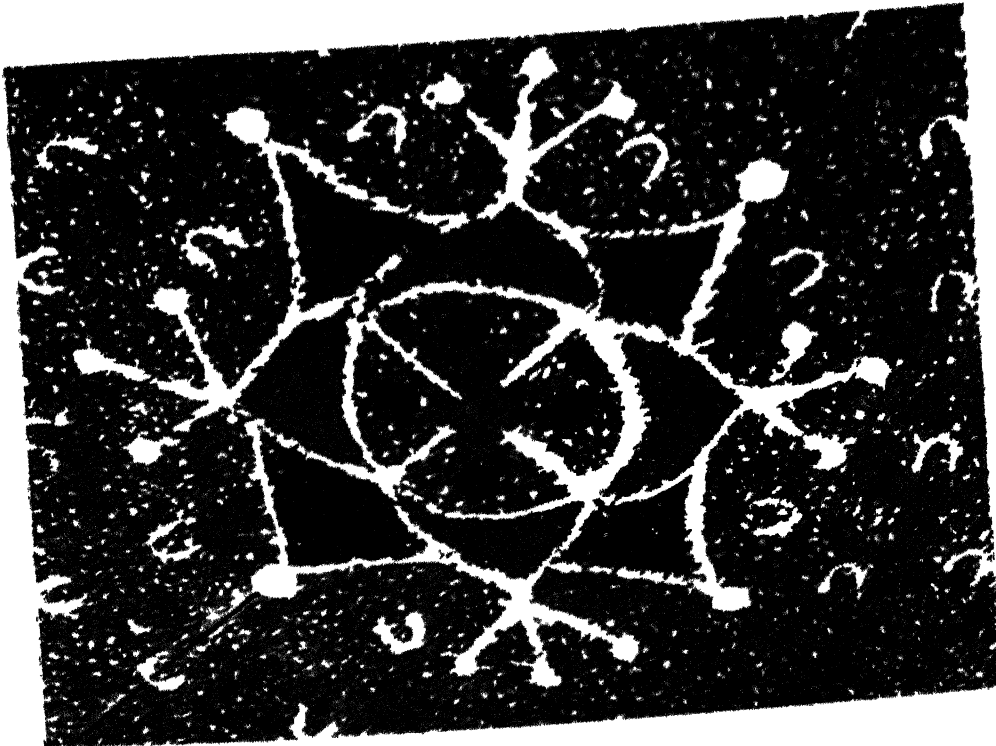
शुभ अवसर पर
बनन वाली चौक
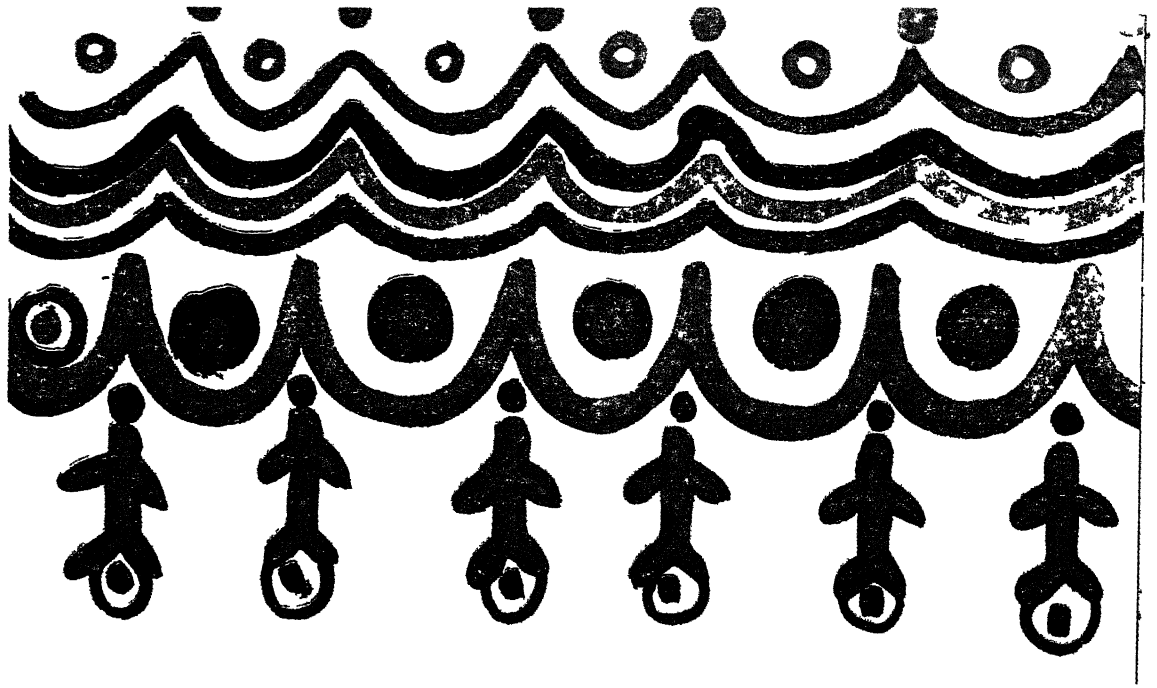
विवाह के अवसर की दीवाल पर
चित्रकारी

शुभ अवसर पर बनने वाली चौक